CC0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

डॉ. उमाशंकर चतुर्वेदी 'कंचन'

अन्तर्द्वन्द्व न सोने देता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

..........विशालहृदयी स्वभाव के वशीभूत 'कंचन' जी अपनी लेखनी चलाते समय अपने दृष्टिकोण को चहुँ ओर घुमाते हैं। अपने सनातन संस्कृति के अराधक , राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत, मानवीय संवेदना से युक्त चिंतन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र, समाज के प्रत्येक वर्ग की व्यथा-कथा को उद्भाषित करते हैं ।

उमाशंकर चतुर्वेदी 'कंचन' जी मानवता के सजग प्रहरी हैं। मानव-सेवा और राष्ट्र-सेवा उनके जीवन का परम लक्ष्य है। वे जानते हैं कि शरीर की अपनी क्षमता है। अतः एक सीमित दायरे में रहकर ही एक व्यक्ति कुछ कर पाता है किन्तु अपनी सद्भावना और सद्विचारों को लेखनी के माध्यम से विस्तृत कर के करोड़ों तक पहुँचाया जा सकता है। चतुर्वेदी जीं ने बहुत कम समय में ही साहित्य जगत में अपनी प्रतिभा के बल पर श्रेष्ठ साहित्यकारों में अपना स्थान बनाया है।

- अशोक कुमार मिश्र

कंचन जी बेहद भावुक इंसान हैं इसी भावुकता के कारण कंचन जी बीमार भी पड़े, दवा चल रही है लेकिन संवेदनाओं के स्तर पर एक सच्चे रचनाकार की तरह मर्म को छूने वाले विषयों पर सामान्य नहीं रह पाते। आज समाज से यही एक चीज 'मर्मस्पर्शी संवेदना' ही तो गायब हो रही है; तमाम विकृतियों की कारक भी तो है, इसीलिए कंचन जी इस मामले में सच्चे अमीर हैं उनकी रचनाएँ समाज के लिए बेहद हितकर । उम्मीद है उनकी यह संवेदना, उनके स्वास्थ्य को प्रभावित करने के बजाय, भारतीय साहित्य को पुनर्समृद्धि की ओर ले जाएगी।

- एल. उमाशंकर सिंह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

5-4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तर्द्वन्द्व न सोने देता

डॉ. उमाशंकर चतुर्वेदी 'कंचन'

संस्कृति प्रकाशन

संस्कृति प्रकाशन, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तर्द्वन्द्व न सोने देता

कविः डॉ. उमाशंकर चतुर्वेदी 'कंचन'

© प्रकाशक

ISBN :978-93-85717-62-8

प्रथम संस्करण : 2018

प्रकाशक

संस्कृति प्रकाशन

बी० 32/32 ए-14 साकेत नगर, वाराणसी - 5

मोबाइल : +91 947 395 2095
+91 941 525 6054

ई-मेल : sanskritiprakashan1@gmail.com

वेबसाइट : www.sanskritiprakashan.com

आध्यात्मिक प्रकोष्ठ का लोगो

आवरण संयोजन : एल उमाशंकर सिंह

अन्तः पृष्ठ सज्जा : अभिषेक चतुर्वेदी

अक्षर संयोजन : अनुरंजिका चतुर्वेदी

मुद्रक

अभिनव प्रिन्टर्स

₹ 150

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दो शब्द

'अन्तर्द्वन्द्व न सोने देता' संग्रह की रचनाएँ समय-समय पर अन्तर्द्वन्द्व के उथल पुथल से हृदय तन्त्रियों के झकझोरने पर उठी हुई पीड़ा को महसूस कर लिपिबद्ध की गई हैं।

मन के अन्तर्द्वन्द्वों ने सुख चैन सब छीना, यहाँ तक की आँखों की नींद भी। मग-मग में पग-पग पर सहजता को कमजोरी समझ प्रभुतावालों ने अपने कद-पद के दम्भ से संवेदनाओं का गला घोटा, अगर यूँ कहूँ कि - "हर रिश्ते में खोट मिली है और हृदय को चोट मिली है" तो अतिशयोक्ति न होगी । यह बात घर, गाँव, समाज से लेकर राष्ट्र और राष्ट्र की सीमाओं के बाहर भी देखने को मिली तथा आज भी मिल रही है। आश्चर्य तो तब होता है जब जहाँ कर्तव्य और संस्कार का बोध कराया जाता है वहाँ भी यह विसंगति अंगद के पाँव की तरह अपने को जमाये हुए खड़ी है।

सम्भव है कुछ रचनाएँ लोगों को बेहद अच्छी लगें और यह भी सम्भव है कि कुछ रचनाएँ भारत में रहते हुए भी पाश्चात्य संस्कृति के ध्वजवाहकों को अच्छी न लगें और उनपर अनर्गल टिप्पणियाँ प्राप्त हों । तथापि उनकी परवाह न करते हुए साहित्य के दर्पण में उन्हीं बिम्बों को दर्शाने का प्रयास किया है जो नहीं होना चाहिए था किन्तु फिर भी हैं।

भारतीय नागरिक एवं सामाजिक प्राणी होने के नाते मैं समझता हूँ कि मेरी मनोभावनाओं के अनुकूल या उनसे सहमत और भी जन होंगे जिनके मन में राष्ट्र तथा समाज के प्रति चिन्तन और दर्द होगा। इस संग्रह की कुछ रचनाएँ नितान्त वैयक्तिक भी लग सकती हैं किन्तु कोई न कोई एक ऐसा भी पाठक होगा जिसे यह महसूस होगा कि यह रचना तो मेरे जीवन का गीत है, और जब वह किसी एक पाठक का गीत हो सकता है तो इस विशाल बहुभाषी राष्ट्र में बहुसंख्य पाठकों का भी गीत हो सकता है जिनके हृदय में राष्ट्रीयता और राष्ट्रप्रेम के साथ-साथ कहीं न कहीं विशुद्ध प्रेम का बीज भी होगा। ऐसी परिस्थिति में मैं सिर्फ यही कहना चाहूँगा कि —

अपनी सूरत देखकर क्यों करता है रोष।
दर्पण झूठ न बोलता दर्पण का क्या दोष।।

तथापि पाठकों के विचारों की प्रतीक्षा रहेगी -

–डॉ. उमाशंकर चतुर्वेदी 'कंचन'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रम

क्रम सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	कौन किससे प्रथम रूठा	11
2.	प्रीत की चूनर रँगा दो	12
3.	अर्घ्य नयन से कढ़ जाते हैं	13
4.	नयनों की प्याली में अमृत	14
5.	मैं तुम्हें शृंगार देता	15
6.	अपलक करे प्रतीक्षा	16
7.	कहाँ करे विश्राम	17
8.	मरघट बदल बदल कर	18
9.	आँखों का अंजन हो जाता	19
10.	अन्तर्द्वन्द्व न सोने देता	20
11.	कहाँ गये सम्बन्ध पुराने ?	21
12.	कबतक बोलो प्रीत लिखोगे	22
13.	पूरा हिन्दुस्तान लिखो	23
14.	मन जागा जागा फिरता है	24
15.	समय की कर प्रतीक्षा	25
16.	अब अस्तित्व नहीं दिखता	26-27
17.	कैसी नेहिल डोर	28
18.	मत पूछो उनसे आधार	29
19.	दूजे को क्यों कर छलना है	30
20.	किस असि से काटोगे कंचन	31
21.	समझें विरल अनोखे	32
22.	सम्प्रति ये उद्यान	33
23.	नित सपनों में खोने वाले	34
24.	दर्द मुझे क्योंकर हो देते	35
25.	मैंने भी बहुरुपिया देखा	36
26.	देखा	37
27.	सर्प विषैले डँसने लगते	38

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

28.	सपना भी बुनना पड़ता है	39
29.	आरक्षित आरक्षण होगा	40
30.	हाथ जोड़ घिघियायेंगे	41
31.	जाति पाति में बाँट रहे हैं	42
32.	अंकुश जरा लगाओ साथी	43-44
33.	अपने देश भक्ति का बोध	45
34.	भूलूँ ऐसी रीत नहीं है	46
35.	याद तुम्हारी आती है	47
36.	कोयलवाली कहाँ गीति है	48
37.	कैसे अपना देश बचेगा	49
38.	झूठ की दरिया में बहते जा रहे	50
39.	जी रहा हर व्यक्ति ही अब क्लेश में	51
40.	कितना बदल गया परिवेश	52-53
41.	सच में क्या ये करना चाहें	54
42.	कितना आज प्रदूषित मन है	55
43.	मेरा मन पगलाये	56-57
44.	मन के भाव बहक जाते थे	58
45.	सभी जगह प्रतिबन्ध	59
46.	ये विचार नव पीढ़ी का	60
47.	मन की सुन्दरता पहले थी	61-62
48.	उसको मैं गद्दार लिखूँगा	63
49.	सब करते हैं हुआँ हुआँ	64
50.	क्यों कि उनकी फौज बड़ी है	65
51.	अब भारत का क्या होगा ?	66
52.	ये कैसे पछतायेंगे ?	67
53.	भारत को मजबूत बनाओ	68
54.	साथ तुरत ही जाना होगा	69
55.	दुनिया का सुनना पड़ता है	70
56.	तब दर्पण धुँधला जायेगा	71
57.	पहले हिन्दुस्तानी थे	72
58.	फिर से दीप जलाना होगा	73

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

59.	सिर्फ झोंक हम धूल रहे हैं	74
60.	सेना का उत्साह बढ़ाये	75
61.	भारत माँ का चीर न खींचो	76
62.	कितना हम मजबूर हो रहे	77
63.	हर सवाल का हल देता है	78-79
64.	पहले देश बचाना होगा	80
65.	गीत ललित गा लेने देते	81
66.	घर की प्रीति सलट जाती है	82
67.	कोई लाख गुनी हो लेकिन	83
68.	बलिवेदी पर माथ चढ़ाओ	84
69.	क्यों भाग रहे हो ?	85
70.	सारी सीमा पार हो गये	86
71.	किसी किसी घर में मिलती है	87
72.	सबको ही रहना है डर के	88
73.	राह में हैं सोइये मत	89
74.	जिस घर रोये मात-पिता नित	90-91
75.	पहले विचार आवश्यक है	92
76.	जीवन वीर जिया करता है	93
77.	कुछ दिन के हो नहीं अमर	94
78.	दुनिया का दस्तूर यही है	95
79.	जीने के प्रति चाह चाहिए	96
80.	बुद्धि तुम्हारी कहाँ सो गई	97
81.	मेरा दिन है रात करो मत	98
82.	थोड़ी सी गुंजाइश रखना	99
83.	इच्छाओं का दमन हो गया	100
84.	थोड़े में इतराना क्या है	101
85.	इससे कौन उबार सकेगा	102
86.	लेखनी कुछ बोल दे तू	103
87.	तुम्हीं देश की शान हो	104
88.	जीवन में प्यार कर सके	105
89.	निर्दोष रहने दो	106

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

90.	तो मैं क्या करूँ	107
91.	सुरभित मलय बहार	108
92.	गुजारा हम भी कर लेते	109
93.	मेरे जैसा गाँव नहीं है	110
94.	सिंहासन हिल जायेगा	111
95.	किसको मित्र बनाऊँ मैं	112
96.	मैं पिपासित रह गया	113
97.	कहो क्या करूँ ?	114
98.	फिर आदर्श बनाना होगा	115
99.	ओठों का स्पर्श चाहिए	116
100.	उजाला कर दिया होता	117
101.	मैं तेरा वरबस मेहमान	118
102.	चैतन्य होता जा रहा	119
103.	चोट दिखाई देती है	120
104.	समय	121
105.	जीवन में कल नहीं मिला है	122
106.	क्या मतलब	123
107.	माँग रहे फिर से आजादी	124
108.	वह तेरी कमजोरी है	125
109.	क्यों इतना विद्वेष हो रहा	126
110.	उलट पोखरी कही नदी से	127
111.	शीशे का घर एक चोट में	128

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तर्द्वन्द्व
न
सोने देता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कौन किससे प्रथम रूठा

गीत को संगीत में तुम बाँधकर कर दो अनूठा।
देख करके छवि तुम्हारी
होश खो तारे पड़े हैं
मुग्ध होकर भाव विह्वल
कवि अथक हारे पड़े हैं
गीत को तुम प्रीतपूर्वक निज अधर से कर दो जूठा।
गीत को संगीत में तुम बाँधकर कर दो अनूठा।।
मन लुभाने के लिए
साधन यहाँ कितने बने हैं
फूल पाती तरु लता
जलजात ये जितने घने हैं
देखने पर सत्य तुम लगता है यह संसार झूठा।
गीत को संगीत में तुम बाँधकर कर दो अनूठा।।
मधुर अनुपम राग से
अनुराग की पीयूष धारा
कर प्रवाहित चिद्गमन में
सींच दो चेतन हमारा
प्रीत तेरी मधुलता जीवन हमारा वृक्ष ठूँठा।
गीत को संगीत में तुम बाँधकर कर दो अनूठा।।
गीत यह प्रत्यक्ष मेरे
प्रेम की तस्वीर है
नयन शर से विद्ध मेरे
चित्त की मृदुपीर है
तुम मुझे बस यह बता दो कौन किससे प्रथम रूठा।
गीत को संगीत में तुम बाँधकर कर दो अनूठा।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रीत की चूनर रँगा दो

कुछ कहूँ इससे कि पहले होठ पर ताले लगा दो।
सत्य को मैं सत्य मानूँ
झूठ को पहचान पाऊँ
नेत्र से जो दूर है–
अस्तित्व उसका जान पाऊँ
दूर होवे द्वेष ईर्ष्या मन का मेरे तम भगा दो।
कुछ कहूँ इससे कि पहले होठ पर ताले लगा दो।।
बात कैसी है अनूठी
प्रीत करना और रोना
रत्न अपने हाथ लेकर–
और अपने हाथ खोना
मैं समझ पाऊँ सभी कुछ भाव तुम मेरे जगा दो।
कुछ कहूँ इससे कि पहले होठ पर ताले लगा दो।।
दीप लेकर आ पड़ा है
द्वार पर कोई पुजारी
मन करे करना वही तुम–
प्रार्थना सुन लो हमारी
बस यही इच्छा की फिर से प्रीत की चूनर रँगा दो।
कुछ कहूँ इससे कि पहले होठ पर ताले लगा दो।।
मैं स्वयं को भूल जाऊँ
इस तरह की प्रीत दे दो
रात दिन मैं गीत गाऊँ–
इस तरह के गीत दे दो
दे नहीं सकते तो मयके से मुझे डोली मँगा दो।
कुछ कहूँ इससे कि पहले होठ पर ताले लगा दो।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्घ्य नयन से कढ़ जाते हैं

पाँव हमारे गाँव तुम्हारे वाले रस्ते बढ़ जाते हैं।
पवन झकोरों संग उड़ उड़ कर
अंशुमालिनी पीछे मुड़ कर
रेखाविद् सी हस्तरेखायें मेरी आकर पढ़ जाते हैं।
पाँव हमारे गाँव तुम्हारे वाले रस्ते बढ़ जाते हैं॥
कौन भाग की बाँचे पाती
कौन लुटाये जीवन थाती
अमराई में आते ही वे गीत पुराने कढ़ जाते हैं।
पाँव हमारे गाँव तुम्हारे वाले रस्ते बढ़ जाते हैं॥
मेरा हाथ रहा है खाली
नहीं पास में पूजा थाली
गंगाजल की बात सोचते अर्घ्य नयन से कढ़ जाते हैं।
पाँव हमारे गाँव तुम्हारे वाले रस्ते बढ़ जाते हैं॥

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नयनों की प्याली में अमृत

नयनों की प्याली में अमृत बार बार तुमने परसा है।
लुक छिपकर तेरा वह मिलना
गन्धित पुष्प कली सा खिलना
कुञ्चित केशों का विन्यास
तेरे अधरों का मधुहास
याद मुझे है, लखने खातिर बार बार ये मन तरसा है।
नयनों की प्याली में अमृत बार बार तुमने परसा है।।
चैत चाँदनी की वे रातें
तेरी मधुर-मधुर वे बातें
अमराई के मध्य बोलना
मीठा-मीठा दर्द घोलना
खेल खेल में बीत गये दिन आँखों ने सब कुछ दरसा है।
नयनों की प्याली में अमृत बार बार तुमने परसा है।।
खुश होना औ कभी रिसाना
रोब दिखाना और मनाना
बिन बोले तेरा रह जाना
आँखों से सब कुछ कह जाना
तेरी मनवाली कर करके बार बार ये मन हरषा है।
नयनों की प्याली में अमृत बार बार तुमने परसा है।।
रिस्ते नाते टूट गये सब
काफी पीछे छूट गये सब
हाथों को ही बस मलना है
निरा अकेले ही चलना है
जब जब याद किया मैंने इन आँखों से ही मन बरसा है।
नयनों की प्याली में अमृत बार बार तुमने परसा है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं तुम्हें शृंगार देता

कब कहाँ अवसर मिला कि मैं तुम्हें शृंगार देता।
भावनाओं में सदा बहता रहा
गैर को अपना सदा कहता रहा
रेत को पानी समझ मैं हिरन सा
दौड़ता, गिरता रहा, ढहता रहा
तुम नहीं मुझको मिली कि मैं तुम्हें उपहार देता।
कब कहाँ अवसर मिला कि मैं तुम्हें शृंगार देता।।
चाँदनी थी चाँद भी उस ओर था
रात्रि की निस्तब्धता का शोर था
स्वच्छ जलधारा नदी का छोर था
तुम रही उस पार मैं इस ओर था
हाथ बढ़ पाये नहीं कि मैं तुम्हें अभिसार देता।
कब कहाँ अवसर मिला कि मैं तुम्हें शृंगार देता।।
लाजवन्ती सा तुम्हारा सिमट जाना
वल्लरी जैसे हृदय से लिपट जाना
स्वप्न में हर रात सब होता रहा
दूर जाना और क्षण में निकट आना
चेतना तब थी नहीं कि मैं तुम्हें यह प्यार देता।
कब कहाँ अवसर मिला कि मैं तुम्हें शृंगार देता।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपलक करे प्रतीक्षा

पीली चूनर अब भी तेरी अपलक करे प्रतीक्षा।
तू आये, आये न आये जैसी तेरी इच्छा।।
कालिदास का यक्ष नहीं
जो नभ से भेजूँ पाती
नेह भरे उर के दीपक में
यादों की है बाती
नहीं कण्व दुर्वासा दिखते किससे माँगू दीक्षा।
पीली चूनर अब भी तेरी अपलक करे प्रतीक्षा।।
'रस गंगाधर' के कवि को भी
नहीं जगत ने छोड़ा
बिन लगाम वाले जबान का
दौड़ा करके घोड़ा
नहीं लवंगी तुम पवित्र अति फिर ये कैसी शिक्षा।
पीली चूनर अब भी तेरी अपलक करे प्रतीक्षा।।
बिन माँगे मोती मिल जाता
माँगे मिले न भीख
मनु शतरूपा से अब तक
सब देते आये सीख
किन्तु ताक पर ये सब रखकर माँग रहा हूँ भिक्षा।
पीली चूनर अब भी तेरी अपलक करे प्रतीक्षा।।
कभी न रीते मेरे उर के
दर्दों वाला कोष
तेरे सुख को लखकर के
मैं सुखी मुझे संतोष
कंचन कलश नारियल ऊपर कुंकुम और परीक्षा।
पीली चूनर अब भी तेरी अपलक करे प्रतीक्षा।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहाँ करे विश्राम

सुबह हुई जीवन की मेरे और हुई कब शाम।
पता चले इससे पहले कि सखे हुआ बदनाम।।
नयना हो गये गंगा यमुना
अश्क न फिर भी रीते
जीवन रण में लड़े बहुत पर
एक युद्ध न जीते
हुई कौन सी गलती जिससे हुए विधाता वाम।
पता चले इससे पहले कि सखे हुआ बदनाम।।
उड़ पाऊँ उन्मुक्त गगन में
समझूँ जग की रीत
तब तक हाथ छुड़ाकर भागा
मेरे मन का मीत
सबके वादे झूठे निकले कोई न आया काम।
पता चले इससे पहले कि सखे हुआ बदनाम।।
एक रतन ऐसा भी पाया
जिसे सँजोते जनम गँवाया
राह कटीली राह रसीली
कहीं धूप तो कहीं पे छाया
पागल मन यह समझ न पाये कहाँ करे विश्राम।
पता चले इससे पहले कि सखे हुआ बदनाम।।
जगती का ये खेल अनूठा
बिना पिया के जीवन ठूँठा
माया में मन समझ न पाया
कौन है सच्चा कौन है झूठा
अर्थ ढूँढ़ता रहा अहर्निश किन्तु रहा निष्काम।
पता चले इससे पहले कि सखे हुआ बदनाम।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मरघट बदल बदल कर

हर रोज लाश जिन्दा मैं फूँकता रहा हूँ
मजबूरियों के चलते मरघट बदल बदल कर।
न चाहते हुए भी निस्तब्धता को छेड़ा
सुरभित मलय पवन ने तुफान का थपेड़ा
कभी इस किनारे आके, कभी उस किनारे जाके
मझधार में आ लौटा जीवन का मेरे बेड़ा
बिस्तर की सलवटों को मैं चूमता रहा हूँ
हर रोज रात रो-रो करवट बदल बदल कर।
मैं खोजता रहा हूँ सुखमय सुघर सलोने
सुमनों के वास्ते ही पालाश के वे दोने,
रोली अबीर चन्दन आया यहाँ सँजोने
कंचन कलश लिए मैं चरणों को उनके धोने।
हर रोज ढूँढ़ता हूँ पावन पवित्रमय जल
पाया न थक गया हूँ पनघट बदल बदल कर।
कभी रो लिया हृदय में कभी खुल के मुस्कुराया
जो गीत मन में आया होठों से गुनगुनाया
मौसम की बेरुखी को कलियों की वेदना को
उन्मुक्त इस गगन को भौरों ने कह सुनाया
रंग तूलिका को लेकर कुछ चित्रकार आये
रंगने लगे स्वयं को झटपट सम्हल सम्हल कर।
हर रोज लाश जिन्दा मैं फूँकता रहा हूँ
मजबूरियों के चलते मरघट बदल बदल कर।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आँखों का अंजन हो जाता

कालिख भी बनकर यदि उनके आँखों का अंजन हो जाता।
जनम जनम से प्यास लगी है
मन में ये अभिलाष जगी है
छूकर उनके पारस कर को लौह रूप कंचन हो जाता।
कालिख भी बनकर यदि उनके आँखों का अंजन हो जाता।।
स्वप्न कभी ऐसा कुछ देखा
हाय विधाता का यह लेखा
टूट टूट कर ये शीशा दिल यदि उनका दर्पन हो जाता।
कालिख भी बनकर यदि उनके आँखों का अंजन हो जाता।।
कई जनम से भाव हिया के
हो जाती मैं पास पिया के
स्वप्नों में भी यदि क्षणभर को मेरा तन अर्पन हो जाता।
कालिख भी बनकर यदि उनके आँखों का अंजन हो जाता।।
आँसू ही गंगाजल होते
चरणों को मल मलकर धोते
किसी जनम में मिल जाते वे मेरा भी तर्पन हो जाता।
कालिख भी बनकर यदि उनके आँखों का अंजन हो जाता।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तर्द्वन्द्व न सोने देता

भावुक होना महाबुरा है
अमृत भी हो गया सुरा है
आँखों से आँसू ढरका कर
मुझे नहीं यह रोने देता।
अन्तर्द्वन्द्व न सोने देता।।

कैसी यह चल पड़ी हवा है
दर्द हो गया आज दवा है
हृदय खोलकर कहीं किसी को
प्रेम बीज न बोने देता।
अन्तर्द्वन्द्व न सोने देता।।

रिश्तों की कैसी मजबूरी
लगी बनाने खुद ही दूरी
सम्बन्धों को ढोना चाहूँ
किन्तु नहीं यह ढोने देता।
अन्तर्द्वन्द्व न सोने देता।।

कोई छोड़ा नहीं कसर है
अन्दर तक हो गया असर है
कंचन उनका होना चाहे
किन्तु नहीं यह होने देता।
अन्तर्द्वन्द्व न सोने देता।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहाँ गये सम्बन्ध पुराने ?

भौतिकता की चकाचौंध में
अन्तर्मन की उगी कौंध में
ढूँढ़ रहा हूँ बड़े गौर से
वे चेहरे जाने पहिचाने।
कहाँ गये सम्बन्ध पुराने।।

जीवन की आपाधापी है
सिर्फ पेट ही यह पापी है
फिर चित पर कैसी छाया ये
करता मानव रोज बहाने।
कहाँ गये सम्बन्ध पुराने।।

रोज रोज मर रहा मनुज है
नया रूप धर रहा दनुज है
अपनों से हो रहे दूर पर
अपनों में चेहरे अनजाने।
कहाँ गये सम्बन्ध पुराने।।

काश! पुराने दिन आ जाते
नेह प्रेम के बादल छाते
राग छेड़ते ऐसा कंचन
स्वयं होठ पर आते गाने।
कहाँ गये सम्बन्ध पुराने।।

निज कर की मुट्ठी बँध जाती
और भावनाएँ सध जाती
कविता में रस छन्द दीखते
कर लेते अनुबन्ध सयाने।
कहाँ गये सम्बन्ध पुराने।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कबतक बोलो प्रीत लिखोगे

सिर्फ कल्पना में बैठे तुम कबतक बोलो प्रीत लिखोगे।
बैठे बैठे कबतक बोलो सुन्दरता के गीत लिखोगे।।
सुघर सलोनी देंह तुम्हारी
चलते-चलते स्याह हो गयी
तुम पर किञ्चित नहीं असर है
कैसी तेरी चाह हो गयी
आह दाह के बीच वसर कर बोलो कबतक शीत लिखोगे।
सिर्फ कल्पना में बैठे तुम कबतक बोलो प्रीत लिखोगे।।
सपनों में बारात सजाकर
अपने हाथों साज बजाकर
बेरूखी के बीच खीझकर
विश्वासों के बीच लजाकर
हार हारकर दाँव स्वयं के झूठे कबतक जीत लिखोगे।
सिर्फ कल्पना में बैठे तुम कबतक बोलो प्रीत लिखोगे।।
माना रहे बहुत तुम आगे
अपनी आँखों सोये-जागे
सम्बन्धों के ताने-बाने
में उलझे हैं तेरे धागे
दुःख की पटरी पर कबतक तुम बोलो सुखद अतीत लिखोगे ।
सिर्फ कल्पना में बैठे तुम कबतक बोलो प्रीत लिखोगे ।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूरा हिन्दुस्तान लिखो

लिखो-लिखो ऐ लिखने वालों! माटी का गुणगान लिखो।
मेहनत और मजूरी करने वालों की पहचान लिखो।।
हाथ हथौड़ा और फावड़ा
खुरपी साथ कुदारी
छुरी गड़ासा लाठी बल्लम
औ तलवार दुधारी
जिसके बल पर कायम, अपने देश का सुरभित मान लिखो।
लिखो-लिखो ऐ लिखने वालों! माटी का गुणगान लिखो।।
गाँव गली के बाग बगीचे
जिसको श्रम बूँदों से सींचे
ऊबड़-खाबड़ आड़े-बेड़े
ऊपर अथवा अतिशय नीचे
रोटी कपड़ा और झोपड़ी के संग महल मकान लिखो।
लिखो-लिखो ऐ लिखने वालों! माटी का गुणगान लिखो।।
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख इसाई
आपस में सब भाई-भाई
कोई सूखी रोटी खाये
कोई खाये सिर्फ मलाई
सबको एक भाव से देखो, पूरा हिन्दुस्तान लिखो।
लिखो-लिखो ऐ लिखने वालों! माटी का गुणगान लिखो।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन जागा जागा फिरता है

मन के आकाशी परिसर में बार–बार बादल घिरता है।
रूप व्याकरण उलझा–उलझा
स्वच्छ आचरण सुलझा–सुलझा
बार–बार कहता है कोई–
लखने खातिर रुक जा, रुक जा
पर आवारा मन न जाने क्यों भागा–भागा फिरता है।
मन के आकाशी परिसर में बार–बार बादल घिरता है।।
बार–बार सिर धुन जाता है
कोई चादर बुन जाता है
चुन जाता है रंग अनोखा
जाने कैसे सुन जाता है
चकरी में नर्तन करते ऊपर नीचे धागा फिरता है।
मन के आकाशी परिसर में बार–बार बादल घिरता है।।
कोई राह बताये कोई
नाहक नहीं सताये कोई
कौन रंग अलबेला होगा
मेरे साथ जताये कोई
जाने कब आ जायेगा वह मन जागा–जागा फिरता है।
मन के आकाशी परिसर में बार–बार बादल घिरता है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समय की कर प्रतीक्षा

धैर्य से कर्त्तव्य करता चल, समय की कर प्रतीक्षा।
सिर्फ अपनी सोचता क्यों, छोड़ उसकी और इच्छा।।
छींटता चल खाद बीजें
कर स्वयं की कर्म खेती
है मिला हिस्से में उर्वर-
या कछारी शुष्क रेती
हर जगह हर हाल में लेता कठिनतम वह परीक्षा।
धैर्य से कर्त्तव्य करता चल, समय की कर प्रतीक्षा।।
चूमता श्रम साध्य जीवन
में, गगनचुम्बी शिखर
वह निखर जाता धरा पे-
या फिसल जाता बिखर
फिर सुधी जन ढंग से अपने सदा करते समीक्षा।
धैर्य से कर्त्तव्य करता चल, समय की कर प्रतीक्षा।।
तू चला है पंथ अपने
किन्तु उसके हाथ मंजिल
व्यर्थ चिंतन कर रहा क्यों-
अर्थ में पाया सुमंजिल
हर समय 'कंचन' अगोचर से न माँगा कर तू भिक्षा।
धैर्य से कर्त्तव्य करता चल, समय की कर प्रतीक्षा।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब अस्तित्व नहीं दिखता

अब अस्तित्त्व नहीं दिखता तुलसी चौरा अँगनाई का।
मंगल कलश, देहरी तोरण, पावन धुन शहनाई का।
खाने का था नहीं ठिकाना
राशन पाये फूल गये
चकाचौंध ऐसा चौंकाया–
करनी धरनी भूल गये
पीढ़ा, चौका, फूल, थाल, भोजन, आदर पहुँनाई का।
अब अस्तित्त्व नहीं दिखता तुलसी चौरा अँगनाई का।
होत भोरहरी झाड़ू–खरहर
सरपत, कूँची, डंठल–अरहर
गीत गवनई, कजरी, पिड़िया–
ढोर–सिवाने छाया अम्बर
दीप दिवाली, विजयादशमी, लिपी भीति चिकनाई का।
अब अस्तित्त्व नहीं दिखता तुलसी चौरा अँगनाई का।।
विरले जन दिखते हैं साठा
कुश्ती, दंगल वाले पाठा
दूध घीव की गमक खो गई–
किसके घर मिलता अब माठा
कंचन जोड़ी, गदा उठाने वाली सफल कलाई का।
अब अस्तित्त्व नहीं दिखता तुलसी चौरा अँगनाई का।।
रे, री, वाली प्यारी बोली
सासुर नैहर वाली डोली
दादी अम्मा वाली झोली–
कुमकुम बिंदिया माथे रोली
बोझ, सोझ, घर, तान पलानी, वह समूह तरुणाई का।
अब अस्तित्त्व नहीं दिखता तुलसी चौरा अँगनाई का।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुआ, बहिनी, चाचा, चाची
फरुहा, खुरुपी, खाँचा, खाँची
शुभ का नेवता घर घर लाची-
बैरन चिठ्ठी, बबुआ बाँची
घर-घर भोजन, वस्त्र सुलभ वह गया दौर कठिनाई का।
अब अस्तित्त्व नहीं दिखता तुलसी चौरा अँगनाई का।।
ढिबरी, दीया, कड़ुवा बाती
बाग-बगैचा, ओल्हा-पाती
बब्बा-नन्ना, पोता-नाती-
काँधै घूमै, फूलै छाती
रीत-प्रीत सब कहाँ खो गई, घर-घर दूध मलाई का।
अब अस्तित्त्व नहीं दिखता तुलसी चौरा अँगनाई का।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कैसी नेहिल डोर

चलने को है विवश अकिंचन, दुखता पोरम् पोर।
घिरा हुआ मकड़ी जाले सा, कैसी नेहिल डोर।।
प्रायः ही आँखों में आँसू
जब तब मिले अधर को हास
जीवन में आपाधापी का–
यही रहा मेरा इतिहास
छुप–छुप कर जीवन काटा हूँ, जैसे काटे चोर।
घिरा हुआ मकड़ी जाले सा, कैसी नेहिल डोर।।
रूठों को बस रहा मनाता
अपनी करनी पर पछताता
मैं भी रूठूँ कभी किसी पर–
सपनों में ही अवसर आता
किंतु स्वप्न आने से पहले हो जाती नित भोर।
घिरा हुआ मकड़ी जाले सा, कैसी नेहिल डोर।।
जिसको अपना समझ रहा था
वह सचमुच में रहा पराया
किस पर गर्व करूँ जब अपनी–
खुद से दूर रही है छाया
कंचन सच में समय बली है, चले न उस पर जोर।
घिरा हुआ मकड़ी जाले सा, कैसी नेहिल डोर।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मत पूछो उनसे आधार

जीवन के अभिलषित हेतु वे झूठ मूठ करते व्यापार।
क्या करते हैं, क्या धरते हैं, मत पूछो उनसे आधार।।

सच कहना, सच सुनना दोनों
सच में बहुत कठिन है
शासक जनता दोनों का ही–
अंतर हृदय मलिन है

दाता और ग्रहीता का बस वाचिक होता है आगार।
क्या करते हैं, क्या धरते हैं, मत पूछो उनसे आधार।।

भूख सभी को सिर्फ स्वार्थ की
लक्ष्यहीन गाण्डीव पार्थ की
अब सपने की बात हो गई–
कौन सुने फरियाद आर्त की

छद्म हँसी के बीच उभयजन, देते हैं सबको आभार।
क्या करते हैं, क्या धरते हैं, मत पूछो उनसे आधार।।

चटक मसाला सभी चाहते
खुशी सदा बेमेल व्याहते
अपनी मुस्कानों के खातिर–
घर बाहर सर्वत्र डाहते

ऐसे में उनसे मत पूछो, क्यों करते ऐसा व्यवहार।
क्या करते हैं, क्या धरते हैं, मत पूछो उनसे आधार।।

कंचन उर की आग न पूछो
स्वर लहरी का राग न पूछो
सिर्फ फूल फल लेते जाओ–
किसका कैसा बाग न पूछो

बस भविष्य की बाट निहारो, प्रबल रखो उनसे आसार।
क्या करते हैं, क्या धरते हैं, मत पूछो उनसे आधार।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूजे को क्यों कर छलना है

मंजिल दूर बहुत है कंचन, बस सीधे चलते रहना है।
सब कुछ छोड़ यहीं जाना तो, दूजे को क्यों कर छलना है।।
छल छद्मों से ऊपर उठकर
बढ़े हुए कद थोड़ा झुककर
सिर्फ भागने वालों साथी–
कहीं साँस लो, थोड़ा रुककर
और विचार करो बस मन में, हमको सच में क्या करना है।
सब कुछ छोड़ यहीं जाना तो, दूजे को क्यों कर छलना है।।
सुख की भूख असीमित होती
निशि दिन है काँटों को बोती
आँख मूँद चलने वालों की–
इक दिन बस आँखें हैं रोती
सोचो पाप गठरिया वालों, पुण्य नदी में कस तरना है।
मुग्ध बढ़े हैं जिस पथ पर पग खतरनाक मन का झरना है।।
सिर वाले ही मर जाते हैं
कटे शीश कुछ कर जाते हैं
जीवन में सबके ही मौका–
चल घर गाँव नगर आते हैं
चलकर, हँसकर, वरण करो तुम, मृत्यु सत्य फिर क्या डरना है।
जिस पर झूल रहे मस्ती में, वह सुख क्षण भर का पलना है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किस असि से काटोगे कंचन

किस असि से काटोगे कंचन, लगी जो बेड़ी पाँव में।
हर कोई है घात लगाये, सम्बन्धों की छाँव में।।
जंगल, पर्वत काट रहा है
नदी, कूप सब पाट रहा है
पानी की गति ऐसी हो गइ–
बूँद–बूँद नर चाट रहा है
सड़क किनारे पथिक कहाँ, कस सुस्ताये अब छाँव में।
उलझाये है सबके मन को, अब कौवों के काँव में।।
बोतल, दारू, धोती, साड़ी
गाँव का मुखिया बाँट रहा है
घुरहू के माई, बेटी को–
जब तब देखो डाँट रहा है
अपना मन उलझाये रहता, कुटिल चाल की दाँव में।
ऐसे मुखिया को चल मारें, दौड़ा–दौड़ा गाँव में।।
चूसी हड्डी, स्वान समझ जो
जनता आगे फेंक रहा है
फूट डालकर जाति पाँति में–
अपनी रोटी सेंक रहा है
ऐसे जनप्रतिनिधि को मारो, घात लगाय कुठाँव में।
किस असि से काटोगे कंचन, लगी जो बेड़ी पाँव में।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समझें विरल अनोखे

रंग महल के बहु दरवाजे, खिड़की और झरोखे।
माया परदा लटक रहा है, समझें विरल अनोखे।।
पाँच तत्त्व से बना महल है
सत्, रज, तम का धन है
कहने को सब अपने वश में–
पर बेबस निज तन है
जनम जनम की रखी कमाई, क्षण, दो क्षण में, सोखे।
माया परदा लटक रहा है, समझें विरल अनोखे।।
सपने अपने नहीं हुए पर
लगते नित दिन प्यारे
मूल मार्ग को भूल गए सब–
क्षण के सुख से हारे
कंचन काया के लालच में, खाय रहे सब धोखे।
माया परदा लटक रहा है, समझें विरल अनोखे।।
चमक दमक पल में मिट जाता
जब आता तूफान
महल, अटारी काटे दौड़े–
बाहर होत परान
लेनी–देनी समझ न आवे, पाप–पुन्य जब जोखे।
माया परदा लटक रहा है, समझें विरल अनोखे।।
चौरासी का ऐसा चक्कर
समझ न आवे मूल्य
अहं पहरुआ बन के बैठा–
कौन मेरे सम तुल्य
ठोक–बजाके मालिक देखे, खाली सारे खोखे।
माया परदा लटक रहा है, समझें विरल अनोखे।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सम्प्रति ये उद्यान

कैसे अपना रूप बचाये सम्प्रति ये उद्यान।
फूल तोड़ घर भरे जा रहे
कुछ डाली में झरे जा रहे
माली आँखें मूँद लिया है–
घोड़े, गदहे, चरे जा रहे
आप बताओ कैसे खींचे कंचन माली ध्यान।
कैसे अपना रूप बचाये सम्प्रति ये उद्यान।।
अगल बगल स्यारों का घेरा
चारों ओर भुजंगी डेरा
रार मची भूखी आँखों में–
मेरा, मेरा, मेरा, मेरा
भयभीती आँखों से देखे बैठा कृषक मचान।
कैसे अपना रूप बचाये सम्प्रति ये उद्यान।।
हड़प भाव ले घूर रहे सब
चरा रहे जस ढोर
मन मसोस कर मुखिया देखे–
चारों ओरी चोर
घात लगाये चुरा रहे सब रोटी, वस्त्र, मकान।
कैसे अपना रूप बचाये सम्प्रति ये उद्यान।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नित सपनों में खोने वाले

नित सपनों में खोने वाले, बहुत देर तक सोने वाले।
जीवन के निज महादौड़ में अक्सर सफल नहीं होते हैं।।
जो जन सिद्ध किये हैं आसन
सोच समझकर देते भाषन
रहें अकेले या निर्जन में-
अपने पर जिनका अनुशासन
वे जीवन के किसी दौड़ में प्रायः विफल नहीं होते हैं।
जीवन के निज महादौड़ में अक्सर सफल वहीं होते हैं।।
दर्पण देख कमी जो वारे
जीवन में कुछ कड़वे खारे
जो निर्बाध अभय चलते हैं-
सहज भाव सब कुछ स्वीकारे
असफलता पाकर भी मग में जो जन विकल नहीं होते हैं।
जीवन के निज महादौड़ में अक्सर सफल वही होते हैं।।
नित्य बीज विष बोने वाले
अपने को ही खोने वाले
दूजे की उन्नति लख कर के-
स्वयं भाग्य पर रोने वाले
प्रगति शीर्ष पर अगर दिखें तो वे अपवाद विरल होते हैं।
जीवन के निज महादौड़ में अक्सर सफल नहीं होते हैं।।
जो सबका प्यारा होता है
आँखों का तारा होता है
विश्वबन्धु का भाव हृदय में-
उसका जग सारा होता है
दयाभाव उपजाने वाले प्रायः हृदय तरल होते हैं।
जीवन के निज महादौड़ में उर वे लिए सबल होते हैं।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दर्द मुझे क्योंकर हो देते

आगों की दरिया में नैया कागज की क्योंकर हो खेते।
दर्द मुझे क्योंकर हो देते।।
सिर्फ मुझे तड़पाना सीखे
समय-समय हड़काना सीखे
प्रेम विरह की चिनगारी को
नाहक में भड़काना सीखे
सपनों में सुनना न चाहूँ, वही नाम क्योंकर हो लेते।
दर्द मुझे क्योंकर हो देते।।
मेरे मन को ही बस बोले
अपने मन को कभी न खोले
रह-रह कर जो गाँठ लगाये-
कौन भला गाँठों को खोले
आँसू ने सौगन्ध लिया तो, कोरों को क्योंकर हो भेते।
दर्द मुझे क्योंकर हो देते।।
तुमने समझा सिर्फ खिलौना
सिलवट से ही भरा बिछौना
प्रीति पौध बढ़ने न पायी-
तुमने छाँट किया है बौना
जो छाया फल-फूल न देवे, उस तरु को क्योंकर हो सेते।
दर्द मुझे क्योंकर हो देते।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैंने भी बहुरुपिया देखा

सम्बन्धों की नाल जोड़कर
अनुबन्धों की ताल तोड़कर
जहर खुरानी करते देखा-
विश्वासों की खाल ओढ़कर
राजतंत्र या लोकतंत्र में ऐसा भी इक खुफिया देखा।
मैंने भी बहुरुपिया देखा।।
कैसे कह दूँ सोच बड़ी है
पाषाणों में लोच बड़ी है
जो सरपट भागा जाता है-
उसके पग में मोच बड़ी है
सिर्फ काठ उल्लू बन बैठा राज रूप में चुपिया देखा।
मैंने भी बहुरुपिया देखा।।
परस रहे अब भी मयखाने
बरस रहे अब भी परवाने
हँसी-खुशी जो फाँसी चूमे-
तरस खा रहे वे दीवाने
पाँव सिकोड़े घुसा जा रहा गद्दी में वह भुपिया देखा।
मैंने भी बहुरुपिया देखा।।
घिरने की सीमा क्या होगी
गिरने की सीमा क्या होगी
सभी कुशल तैराक बने हैं-
तिरने की सीमा क्या होगी
मुद्रा स्वर्ण, रजत, ताँबा से कागज का अब रुपिया देखा।
मैंने भी बहुरुपिया देखा।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देखा

एक एक से नेता देखा
स्वाभिमान हत जेता देखा
राजनीति में आने खातिर–
बेटी का विक्रेता देखा।

अन्तर्मन को छलते देखा
द्वेषभाव में जलते देखा
स्वारथ भूख मिटाने खातिर–
गलत राह पर चलते देखा।

पतली गली निकलते देखा
दृढ़तम पाँव फिसलते देखा
जो पोषक थे स्वयं राष्ट्र के–
उनको द्रोह उगलते देखा।

सूरज को भी ढलते देखा
हाथों को भी मलते देखा
सिर्फ स्वार्थ में विषधर को भी–
आस्तीन में पलते देखा।

गुपचुप पाठ पढ़ाते देखा
दारू, नोट, चढ़ाते देखा
मुखिया के कुर्सी के खातिर–
भाई–बन्धु लड़ाते देखा।

सीढ़ी नई गढ़ाते देखा
पीढ़ी मूर्ख बनाते देखा
कंचन का बेलचा बनवाकर–
कूड़ा नित्य उठाते देखा।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्प विषैले डँसने लगते

कोई जूठी थाली दे दे
भरी हुई बस प्याली दे दे
कुर्सी का आश्वासन देकर-
भारत माँ को गाली दे दे
वेश्यालय के भडुँओं जैसा तब नेता ये हँसने लगते।
और उसी का लाभ उठाकर सर्प विषैले डँसने लगते।।
बहुत दूर इनसे खुद्दारी
रग-रग में इनके गद्दारी
दूर-दूर तक ढोल पीटते-
जान रही है दुनिया सारी
हो निर्लज्ज खड़े रहते हैं जब जुबान से फँसने लगते।
और उसी का लाभ उठाकर सर्प विषैले डँसने लगते।।
कुछ का सीना नाप लिया है
भली भाँति मन भाँप लिया है
भारत को गिरवी रखने की-
मन में अपने पाप लिया है
किंतु जिसे मक्कारी प्यारी, वे दलदल में धँसने लगते।
और उसी का लाभ उठाकर सर्प विषैले डँसने लगते।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सपना भी बुनना पड़ता है

जीवन में आगे बढ़ने को सपना भी बुनना पड़ता है।
गली-मोहल्ला, गाँव-नगर चल माथा भी धुनना पड़ता है।।
पथरीले, रेतीले मग पर
शुष्क और अति गीले मग पर
चाहे अनचाहे ही मन से-
आठ प्रहर में कभी भी डग भर
इष्ट देव के चरणों के हित सुमनों को चुनना पड़ता है।
जीवन में आगे बढ़ने को सपना भी बुनना पड़ता है।।
कौन हाथ तेरा गहता है
भला बुरा क्या कुछ कहता है
हृदय-ज्वाल पर छींटे देकर-
कुटिल हँसी हँसता रहता है
लक्ष्य देख, सब अनदेखा कर, बातों को सुनना पड़ता है।
जीवन में आगे बढ़ने को सपना भी बुनना पड़ता है।।
जो मंजिल को पा लेते हैं
दुनिया को वे भा लेते हैं
श्रृंग पहुँच की कठिनाई को-
बड़े हर्ष से गा लेते हैं
आगे बढ़ पूनी ले कर में टूटी को पुनना पड़ता है।
जीवन में आगे बढ़ने को सपना भी बुनना पड़ता है।।
कंचन जग की रीति पुरानी
अनपढ़ हो या अतिशय ज्ञानी
जो संघर्ष किया है उसकी-
टूटी - फूटी, छोटी - बानी
मिली सफलता उसको कैसे, गाथा को गुनना पड़ता है।
जीवन में आगे बढ़ने को सपना भी बुनना पड़ता है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आरक्षित आरक्षण होगा

वैरागी मन आज हुआ है
शून्य अंक पा पास हुआ है
क्योंकर कोस रहे हो उसको–
नेताओं की प्रबल दुआ है
भारत के भावी भविष्य का ऐसे ही संरक्षण होगा।
संविधान से ऊपर उठकर आरक्षित आरक्षण होगा।।
हर नेता को वोट चाहिए
पढ़े लिखे को चोट चाहिए
बड़े भाग से कुर्सी पाई–
दोनों हाथों नोट चाहिए
नेताओं ने ठान लिया है, प्रतिभा का अब भक्षण होगा।
संविधान से ऊपर उठकर आरक्षित आरक्षण होगा।।
अब नेतागण नहीं सुनेंगे
अपनी मर्जी नीति चुनेंगे
अलग बात है समय चोट खा–
पछताएँगें माथ धुनेंगे
न्याय नीति के बड़े दाँत से अनसोचा आरक्षण होगा।
संविधान से ऊपर उठकर आरक्षित आरक्षण होगा।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हाथ जोड़ घिघियायेंगे

इन्हें उच्च हर आसन देंगे
घर बैठे ही राशन देंगे
सही बात बोले जो कोई
मनमर्जी ये शासन देंगे
नेता-अभिनेता अध्यापक सबको सबक सिखायेंगे।
उच्च वर्ण का कोई भी हो सबको ये गरियायेंगे।।
श्रमजीवी रोता आया है
अपना सब खोता आया है
आदिकाल से सत्ता मद का-
दुरुपयोग होता आया है
इनको जो अधिकार मिला है उसकी हनक दिखायेंगे।
सिर्फ एक्ट का दुरुपयोग कर कारागार घुमायेंगे।।
होगी कभी न मनसा पूरी
कभी भूल जो आँखें घूरी
उसकी शामत आ जायेगी-
बन्दर के कर में है छूरी
पकड़ गये गर सही जगह तो दाँत निपोर दिखायेंगे।
साहब हमसे गल्ती हो गई, हाथ जोड़ घिघियायेंगे।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाति पाति में बाँट रहे हैं

सिर्फ वोट के खातिर देखो तलवे-तलवे चाट रहे हैं।
प्रीति परस्पर वाला कुँआ, अब नफरत से पाट रहे हैं।।

राजनीति की जहर विषैली
गाँव-शहर घर-घर तक फैली
दूध धुले जो दीख रहे हैं-
उनकी चादर सबसे मैली

भाई चारा रीति प्रीति को बड़े प्रेम से काट रहे हैं।
कंचन कैसे कहे देश को जाति पाँति में बाँट रहे हैं।।

आजादी का मोल न जाने
कैसे बजती ढोल न जाने
मुठ्ठी में ऊँगली जन राखें-
मीठी ऐसी बोल न जाने

मुर्खों को देकर सिंहासन प्रतिभाओं को छाँट रहे हैं।
कंचन कैसे कहे देश में जाति पाँति को बाँट रहे हैं।।

किससे आज करें हम आशा
हर नेता की एकी भाषा
अश्व बाघ के पैर जकड़कर-
दौड़ हेतु सब फेंके पाशा

कंचन को पीतल, पीतल को कंचन कहकर डाँट रहे हैं।
कंचन कैसे कहे देश में जाति पाँति को बाँट रहे हैं।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंकुश जरा लगाओ साथी

अंकुश जरा लगाओ साथी, निज मन के जज्बातों पर।
बाहर भीतर चोट हो रही, राष्ट्र धर्म के नातों पर।।
सोचो, कैसे खड़ा हो सकें
प्रभुतायुत निज पाँव पर
छोटी-छोटी बातों पर ही
लग जाते हो दाँव पर
अपना जीवन कर बैठे हो
पाँव बढ़ा दो नाँव पर
कुटिल विरोधी नजर गड़ाये-
खड़ा, शहर हर गाँव पर।।
ऐसे में निश्चिंत न बैठो, ख्याल करो शह-मातों पर।
अंकुश जरा लगाओ साथी, निज मन के जज्बातों पर।।
संग साथ सब छूट रहा है
देखो भारत टूट रहा है
जिसे भी देखो आँख मूँदकर-
दोनों हाथों लूट रहा है
पंगु बनाने वाली साथी
सुविधाओं का त्याग करो
जिससे हर मानव हो विकसित
स्वर लहरी में राग भरो
स्वार्थ हेतु विष घोल दिया है, भाईचारे नातों पर।
अंकुश जरा लगाओ साथी, जीवन में जज्बातों पर।।
छुआ छूत का भेद मिटाकर
सबको अपने साथ बिठाकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रीति रीति में पगने वाली
कंचन बाँटों स्वयं सुधा-कर
सब ही सबसे छुट जायेंगे
धरा धाम से उठ जायेंगे
आने वाले सबके वंशज
बिना बात के लुट जाएँगें
उठो आज पहरू बन जाओ, आग उगलती रातों पर।
अंकुश जरा लगाओ साथी, निज मन के जज्बातों पर।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपने देश भक्ति का बोध

इसी राष्ट्र में खाते - पीते
इसी राष्ट्र में जीते हैं
इसी राष्ट्र में अपनी कथरी-
रोज - रोज ये सीते हैं
जो सिर सैन्य सुरक्षा देते, उन पर करते हैं नित क्रोध।
इनको कब कैसे कर होगा, अपने देशभक्ति का बोध।।

बढ़ी हुई सुविधाएँ पाते
फिर भी मन से नहीं अघाते
संरक्षण आरक्षण फिर भी-
राग विदेशी हरदम गाते
इनकी मनोभावनाओं पर, कौन लगायेगा अवरोध।
इनको कब कैसे कर होगा, अपने देशभक्ति का बोध।।

उच्च राष्ट्रपद होकर आये
किंतु उन्हें यह देश न भाये
एक नहीं दो चार उद्धरण-
नेता - अभिनेता बौराये
कंचन अब भी सब जन सोचें, और करें मति गति से शोध।
इनको कब कैसे कर होगा, अपने देशभक्ति का बोध।।

कुछ करते हैं रोज मसौदा
कैसे होगा देश का सौदा
जो छाया फल फूल है देता-
वही सुहावन भारत पौधा
इसे दुःख क्षति पहुँचाने पर, कुछ को होता है नित मोद।
इनको कब कैसे कर होगा, अपने देशभक्ति का बोध।।

राष्ट्रधर्म है, राष्ट्रगीत है
उनको गाना परम प्रीत है
जिसकी छाया में हम जीते-
उसे जो समझा वही मीत है
बढ़ें अन्न जल खाकर जिसका, उसको समझो है अनुरोध।
इनको कब कैसे कर होगा, अपने देशभक्ति का बोध।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूलूँ ऐसी रीत नहीं है

प्यार परिंदा उड़ता है, भयभीत नहीं है।
प्रथम प्रेम को भूलूँ ऐसी रीत नहीं है।।

गीत तुम्हारे अधरों ने जो गाये थे
अब भी मेरे कानों में रस घोल रहे
मनोभाव भौंरे बन तेरे उपवन में–
सुबह–शाम, दिन–रात मगन हो डोल रहे

कैसे कह दूँ जिंदा तेरी प्रीत नहीं है।
प्यार परिंदा उड़ता है, भयभीत नहीं है।।

याद तुम्हारी भोली सूरत आती है
कुछ क्षण को प्रमुदित छाती हो जाती है
लुक–छिप करके किसी बहाने पनघट पर–
मूक इशारे, याद तुम्हारी पाती है

कैसे कह दूँ सुंदर सुखद अतीत नहीं है।
प्यार परिंदा उड़ता है, भयभीत नहीं है।।

याद कढ़ाई वाली अब भी दस्ती है
याद पढ़ाई वाली अब भी मस्ती है
बड़े बाप की बेटी थी, हो गई दूर तुम–
छू लूँ कैसे हाथ, नहीं वह हस्ती है

कैसे कह दूँ हार, हार में जीत नहीं है।
प्यार परिंदा उड़ता है, भयभीत नहीं है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

याद तुम्हारी आती है

अब भी हमको याद तुम्हारी आती है।
उर अंतर में जलती नेह की बाती है।।

वर्षों–वर्षों, वर्षों, सच में बीत गए
लेकिन लगता सच में कल ही मीत गए
अब भी क्वाँरी माँग तुम्हारी राह तके
हार–हार में हार, सही में जीत गए

अभी सुरक्षित मन कोने में पाती है।
अब भी हमको याद तुम्हारी आती है।।

तूने मेरे जीवन को ही मोड़ दिया
रही गरीबी इसीलिए घर छोड़ दिया
बड़े जतन से मैंने उसे बनाया था
बिन सोचे बिन समझे घट को फोड़ दिया

गीत लिखे थे सहज, सहेली गाती है।
अब भी हमको याद तुम्हारी आती है।।

रोज कुहाँसे आते, छँटते रहते हैं
दर्द हृदय से उठते, बँटते रहते हैं
विरही दिन, रातें पहाड़ सी लगती हैं
पर कंचन की याद में कटते रहते हैं

यादों की बदली अक्सर छा जाती है।
अब भी हमको याद तुम्हारी आती है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोयलवाली कहाँ गीति है

जातिवाद में गाँव बँटा है, पहलेवाली कहाँ प्रीति है।
कौआ सारे राग अलापें, कोयल वाली कहाँ गीति है।।
छल छद्मों से भरा हुआ है
हर मानव अब डरा हुआ है
सबको फूँक-फूँक पीना है-
पहले से मुँह जरा हुआ है
आकर हमें बताये कोई किस प्रकार की राजनीति है।
कौआ सारे राग अलापें, कोयल वाली कहाँ गीति है।।
सबके वादे कहीं कोट कर
प्रेम प्रदर्शन सिर्फ वोट भर
जो भी चेहरे दीख रहे सब-
विश्वासों का गला घोंटकर
आये हैं उत्थान देश का करने कैसी कूटनीति है।
कौआ सारे राग अलापें, कोयल वाली कहाँ गीति है।।
चमक रहा सबके तन खादी
कौन कहे इनको अपराधी
ये हारें या जीतें कंचन-
दोनों में ही है बरबादी
चेतो बदलो गलत सोच को, सबको कहती विदुर नीति है।
कौआ सारे राग अलापें, कोयल वाली कहाँ गीति है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कैसे अपना देश बचेगा

अगर नहीं चेते तुम अब भी, तब सारा संसार हँसेगा।
चारों ओर खड़े हैं दुश्मन, कैसे अपना देश बचेगा ?
छल छद्मों में पलनेवालों
राजनीति में चलने वालों
अपने क्षुद्र स्वार्थ के कारण–
देश प्रेम से जलने वालों
तुम्हीं बताओ आगे आकर कैसे अपना देश बचेगा।
जब सीमा के साथ–साथ में घर में ही कुहराम मचेगा ?
तुष्ट नोह को करनेवालों
पुष्ट द्रोह को करनेवालों
कभी न समझे देश प्रेम क्या–
रुष्ट मोह को करनेवालों
अब अजीर्ण आकण्ठ हुआ है, बोलो कैसे भेष पचेगा।
अगर नहीं चेते तुम अब भी तब सारा संसार हँसेगा।।
बहुत हो गया अब भी छोड़ो
देश द्रोह से मुँह को मोड़ो
किंचित शर्म बचा हो तन में,
देश प्रेम से नाता जोड़ो
सबके सब यदि छली हुए तो कौन भला इतिहास रचेगा।
तुम्हीं बताओ आकर कंचन कैसे अपना देश बचेगा ?

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूठ की दरिया में बहते जा रहे

क्या हुआ, तारीफ करते जा रहे।
झूठ की दरिया में बहते जा रहे।।

थे कहाँ, आकर कहाँ पर रुक गये
तन गये, खुद से कटे फिर झुक गये
डाल की धारा न भाषा समझ पाये-
और अपने दाँव में ही चुक गये

जो कभी सोचे नहीं वह दर्द सहते जा रहे।
झूठ की दरिया में बहते जा रहे।।

बिन तपे आती न कंचन में चमक
कौंध बिन आती न दामिनि में दमक
फूल अपनी गंध देकर झर गये-
किन्तु अब भी बाग में उनकी गमक

दम्भ जड़ चेतन हिले प्राचीर ढहते जा रहे।
झूठ की दरिया में बहते जा रहे।।

छटपटाती विवश हो देखे व्यथा
और कवि कैसे लिखे खुद की कथा
जो समय के आइने को तोड़ दे-
छोड़ दो कंचन स्वयं ऐसी प्रथा

त्याग उनको, जो स्वयं विष थाल गहते जा रहे।
झूठ की दरिया में बहते जा रहे।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जी रहा हर व्यक्ति ही अब क्लेश में

भावना में भक्ति की अनुरक्ति की
क्षरण करते जा रहे हैं शक्ति की
लुंज पुंज संविधान हो गया–
मिल गयी स्वतन्त्रता अभिव्यक्ति की

कौन किसको अब सँभाले देश में।
जी रहा हर व्यक्ति ही अब क्लेश में।।

जातिवादी द्वेष ने मारा मुझे
छद्मवादी वेष ने मारा मुझे
राजनैतिक डाकुओं की भीड़ में–
आज खादी वेष ने मारा मुझे

सोचता, क्या हो गया परिवेश में।
जी रहा हर व्यक्ति ही अब क्लेश में।।

गाँव को जंगल बना के रख दिये
ध्यान को दंगल बना के रख दिये
जिससे लेते साँस सुबह–ओ–शाम थे–
हम उसे खुद ही अमंगल कर दिये

अब भ़लाई सोचते सब द्वेष में।
जी रहा हर व्यक्ति ही अब क्लेश में।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कितना बदल गया परिवेश

हम नित दिन फल फूल रहे हैं
रिश्ते-नाते भूल रहे हैं
हाथों में सुरमेदानी ले-
झोंक आँख में धूल रहे हैं

जिस धरती पर हम सब रहते करते उससे द्वेष।
कितना बदल गया परिवेश।।
कहाँ रहा कहँ आकर ठहरा कहाँ जा रहा देश
कितना बदल गया परिवेश।।

भक्ति भावना भ्रमित हो गयी
भूल गये हम भाषा
पवित प्यार पूजा जाता था-
बदल गयी परिभाषा

हँसी हुई गायब होठों की सिर्फ रह गया क्लेश।
कितना बदल गया परिवेश।।
कहाँ रहा कहँ आकर ठहरा कहाँ जा रहा देश
कितना बदल गया परिवेश।।

गहन नीचता नृत्य कर रही
नग्न हुई नैतिकता
भारत की गरिमा को भूले-
उभर गई भौतिकता

अंदर से काले जो ठहरे, उज्ज्वल उनका वेश।
कितना बदल गया परिवेश।।
कहाँ रहा कहँ आकर ठहरा कहाँ जा रहा देश
कितना बदल गया परिवेश।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोष किसे दें जब अपने ही
निज को लूट रहें हैं
है स्वतंत्र कंचन ये भारत–
फिर भी टूट रहे हैं

क्षुद्र स्वार्थ के लिए शत्रु को बेच रहें हैं देश।
कितना बदल गया परिवेश।।
कहाँ रहा कहँ आकर ठहरा कहाँ जा रहा देश
कितना बदल गया परिवेश।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सच में क्या ये करना चाहें

घटाटोप अन्धेरा छाया
ऐसा क्योंकर समय ये आया
कहने को दिन ही है लेकिन–
अब प्रकाश हो गया पराया
दिवा रात का भेद मिटाकर सच में क्या ये करना चाहें।
सबकी अपनी अलग सोच है, सबकी अपनी अलग हैं राहें।।
कालिन्दी का कूल नहीं है
छोटी मोटी भूल नहीं है
पग में नित्य चूभता सबके–
पर बबूल का शूल नहीं है
घूम रहा है साधु वेश में फैलाकर शैतानी बाहें।
सबकी अपनी अलग सोच है, सबकी अपनी अलग हैं राहें।।
आकाशी परिधान नहीं है
किसी दिशा का ज्ञान नहीं है
कहने को मर्मज्ञ हैं लेकिन–
अपने तन का ध्यान नहीं है
पास पड़ोसी के संग संग में, फैलाता है नित अफवाहें।
सबकी अपनी अलग सोच है, सबकी अपनी अलग हैं राहें।।
दिशा दिशा में महक गई है
सकल भावना चहक गई है
नहीं ज्वाल बुझने वाली अब–
उर की ज्वाला दहक गई है
जिधर देखिये उधर आ रही, उर पीड़ा की प्रबल कराहें।
सबकी अपनी अलग सोच है, सबकी अपनी अलग हैं राहें।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कितना आज प्रदूषित मन है

कितना आज प्रदूषित मन है, सोच रहा हूँ कंचन।
बात बात में जहर भरा है, ऐसा धूर्त प्रवंचन।।
काटे दौड़े, गली सड़क
अब काट रहा चौराहा
यादों के संग दौड़ काटती-
जिसको मैंने चाहा
हँसी ठहाके गिरवी हो गये बिका आँख का अंजन।
कितना आज प्रदूषित मन है, सोच रहा हूँ कंचन।।
स्वारथ से लथपथ रिश्ते हैं
टूट गई मर्यादा
कौन सुनेगा दर्द हमारा-
कहते बोल न ज्यादा
सुनना ही जब हुआ असंभव, कौन बने दुख भंजन।
कितना आज प्रदूषित मन है, सोच रहा हूँ कंचन।।
आदि काल से लेनी देनी
सृष्टि में होता आया
जो बोया सो काट रहा है-
फिर भी समझ न पाया
कलि का प्रबल प्रभाव कहूँ, या जगवाले का मंचन।
कितना आज प्रदूषित मन है, सोच रहा हूँ कंचन।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरा मन पगलाये

टी.वी. पर डिबेट देख कर मेरा मन पगलाये।
नैतिकता जा कहाँ खुदकुशी, कर ली समझ न आये।।

धर्मगुरू सेवी समाज से
कौन करे अभिलाषा
पढ़े-लिखे जनप्रतिनिधियों की-
जब ऐसी ओछी भाषा

भिन्न-भिन्न स्वर लहरी में सब अपनी राग बजाये।
नैतिकता जा कहाँ खुदकुशी, कर ली समझ न आये।।

भले सत्य हो किंतु सत्य को
ये बस झूठ कहेंगे
मिथ्या, झूठ, प्रवंचन की-
दरिया में नित्य बहेंगे

इनकी बिगड़ी मनोदशा है, कौन भला समझाये।
नैतिकता जा कहाँ खुदकुशी, कर ली समझ न आये।।

जिस थाली में करते भोजन
उस में छेद करेंगे
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई-
सबमें भेद करेंगे

क्षुद्र स्वार्थ में डूब मरेंगे इनको कौन बचाये।
नैतिकता जा कहाँ खुदकुशी, कर ली समझ न आये।।

नियम और काननू ध्वस्त है
ऐसा इनका पासा
चंद स्वार्थ के लिए जहाँ पर-
बदल गई परिभाषा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आँखों पट्टी, हाथ तराजू, लिए न्याय शरमाये।
नैतिकता जा कहाँ खुदकुशी, कर ली समझ न आये।।

दस चोरों के प्रबल झुण्ड में
साव चोर कहलाये
अपने मन को थपकी देके-
सुबह शाम बहलाये

कंचन का बस चले अगर तो इन्हें काट खा जाये।
नैतिकता जा कहाँ खुदकुशी, कर ली समझ न आये।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन के भाव बहक जाते थे

देख टिकोरे चोंच मारने, तोते सहज चहक जाते थे।
वह भी क्या प्रिय दिन थे कंचन, मन के भाव बहक जाते थे।।
संधि काल की वह परछाईं
सुरभित बागों की गहराई
उसे साथ ले नित जाता था–
इत उत छुपकर के अमराई
बात बात में बात निकलती, दोनों हृदय सहक जाते थे।
वह भी क्या प्रिय दिन थे कंचन, मन के भाव बहक जाते थे।।
हाथों से हाथों को गहकर
मनोभाव धारा में बहकर
जो कुछ भी आचरित हुआ था–
वह सब मर्यादा में रहकर
तेरे फूल किताबों में थे, खोलूँ सदा महक जाते थे।
वह भी क्या प्रिय दिन थे कंचन, मन के भाव बहक जाते थे।।
नदी किनारे कभी साथ में
रात चाँदनी बैठा करते
कभी किसी छोटी बातों पे–
उभय हृदय थे ऐंठा करते
अरुणोदय की लाली के संग दोनों लोग ललक जाते थे।
वह भी क्या प्रिय दिन थे कंचन, मन के भाव बहक जाते थे।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सभी जगह प्रतिबन्ध

रुपये पैसों ने व्यवधानित किया सकल सम्बन्ध।
कैसे बोलूँ, किससे बोलूँ सभी जगह प्रतिबन्ध।।
जिसके पास नहीं है पैसा
उससे अब सम्बन्ध ही कैसा
गहन गरीबी को लखकर के-
सभी कह रहे ऐसा-वैसा
पढ़ा लिखा तैराक कुशल था, किंतु आज मतिमंद।
रुपये पैसों ने व्यवधानित किया सकल सम्बन्ध।।
मात-पिता हो गये पराये
हुई पराई मेहरी
भाई बहन तरेरें आँखें-
दुर्लभ गृह की डेहरी
सारे रिश्तों के स्वर टूटे बिगड़ गए सब छन्द।
रुपये पैसों ने व्यवधानित किया सकल सम्बन्ध।।
ऐसा नहीं, नहीं श्रम करता
किंतु भाग्य ने मारा
ग्रह की चाल प्रबल होती है-
बेबस आज बिचारा
कड़ी सभी खुद लगीं टूटने, टूट गए अनुबंध।
रुपये पैसों ने व्यवधानित किया सकल सम्बन्ध।।
सभी सिकोड़ें मुँह को अपने
दुर्लभ मन का सपना
कंचन निखरोगे तुम जग में-
सीखो खुद में तपना
टेसू को है कौन पूछता, रूप, मगर निर्गन्ध।
रुपये पैसों ने व्यवधानित किया सकल सम्बन्ध।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ये विचार नव पीढ़ी का

सबकी केवल एक सोच है, बस जुगाड़ हो सीढ़ी का।
चढ़ो, मार दो लात, हटा दो ये विचार नवपीढ़ी का।

मेरा मन है, मेरा तन है
कहीं लुटा दूँ मेरा धन है
ऐसी मैं आजादी चाहूँ-
वरना घर मुझको ही वन है

इस प्रकार की सोच हुई है घर-घर में नव पीढ़ी का।
सबकी केवल एक सोच है, बस जुगाड़ हो सीढ़ी का।।

नए वस्त्र अब फटे दीखते
जगह जगह से कटे दीखते
जो सपने में नामुमकिन था-
उनसे ही अब सटे दीखते

इस प्रकार की रोच हुई है घर-घर में नव पीढ़ी का।
सबकी केवल एक सोच है, बस जुगाड़ हो सीढ़ी का।।

संस्कार अब हुआ भग्न है
चेतनता में हुआ नग्न है
दादा-दादी कथा कहानी-
छोड़, नष्ट घर हुआ मग्न है

इस प्रकार की लोच हुई है घर-घर में नव पीढ़ी का।
सबकी केवल एक सोच है, बस जुगाड़ हो सीढ़ी का।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन की सुन्दरता पहले थी

रूप राशि पर न्यौछावर होते अब प्रेम पुजारी।
मन की सुन्दरता पहले थी कभी प्रेम पर भारी।।

भाव भंगिमा खत्म हो गयी
खतम हुई मुस्कान
हृदय पृष्ठ को पढ़ने वाला
नहीं रहा अब ज्ञान
प्रेम पनपता था जब दिल में
जल उठती थी आग
मेरा प्रेम समादृत हो जग
भले दूँ मैं सिर त्याग

भस्म भाव हो गये सभी के, घूम रहे व्यभिचारी।
मन की सुन्दरता पहले थी कभी प्रेम पर भारी।।

अब तो प्रेम छलावा केवल
भूख वासना खारी
पौध लगाने से पहले ही
कर लेते तैयारी
पूज्य प्रेम अब हुआ खिलौना
जगह जगह अतिरेक
रूप कुरूप बनाते क्षण में
देते एसिड फेंक

खुद सौन्दर्य विदीर्ण कर रहे, अब के प्रेम पुजारी।
मन की सुन्दरता पहले थी कभी प्रेम पर भारी।।

पिटा प्रेम में मजनूँ लेकिन
लैला पीठ पे साटा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सम्बन्धों में आज देखते
दोनों लाभ औ घाटा
चादर जैसे रोज बदलते
बिस्तर पर नित प्यार
एक-एक पर कइ-कइ लट्टू
प्यार हुआ व्यापार

आपस में डाँटा डाँटी तो, उपरे बेंट कुदारी।
मन की सुन्दरता पहले थी कभी प्रेम पर भारी।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसको मैं गद्दार लिखूँगा

कंघा केश कटार लिये जो
चीर दिये दुश्मन का सीना
अपने बाँकेपन से दूभर-
कर डाले दुश्मन का जीना
ऐसे वीर बहादुर को ही असली का सरदार लिखूँगा।
जो दुश्मन को गले लगाए उसको मैं गद्दार लिखूँगा।।

प्रेम उगाने वाली वादी में
जो नफरत बोते हैं
एक जाति औ एक धर्म के लिए-
सिर्फ जो रोते हैं
ऐसे राज चलाने वालों को मैं बदबूदार लिखूँगा।
मीठा-मीठा जहर दे रहे उनको मैं गद्दार लिखूँगा।।

मातृ भूमि का इंच इंच
जिनको प्राणों से प्यारा है
पैंसठ, इकहत्तर करगिल में-
जिसने शीश उतारा है
ऐसे वीर शहीदों को ही कंचन मैं दमदार लिखूँगा।
जो अपनी संस्कृति से खेले उसको मैं गद्दार लिखूँगा।।

जो प्रकाश को अंधकार का
अब भी रूप बताता है
सत्य अहिंसा के पोषक को-
छलता और सताता है
उसको छाती ठोक-ठोककर धरती का मैं भार लिखूँगा।
जाति धर्म में फूट जो डाले, उसको मैं गद्दार लिखूँगा।।

संस्कार संस्कृति के मग पग
जिसका अब तक रुका नहीं
राष्ट्रद्रोहियों से लड़ वारे-
शीश, किंतु सिर झुका नहीं
माँ का दूध, बहन की राखी गर्वित को खुद्दार लिखूँगा।
जो भारत की जय न बोले उसको मैं गद्दार लिखूँगा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सब करते हैं हुआं हुआं

नगर शहर में रहने वाले
सुनी सुनाई कहने वाले
बिन नापे ही थाह बताते–
दरिया में गिर बहने वाले

एक श्रृगाल हुआँ करता तो सब करते हैं हुआँ हुआँ।

अबके चिंतक कूप न जाने
खड़ी दुपहरी धूप न जाने
राशन चाहे जितना खा लें–
चलनी जाता सूप न जाने

जो गुलाब जल सेवन करते उनके सिर भी जुआँ जुआँ।
एक श्रृगाल हुआँ करता तो सब करते हैं हुआँ हुआँ।।

ए.सी. में ही रोटी सेकें
पेशी में ही गोटी फेकें
काला चश्मा आँख लगाये–
देशी में ही बोटी सेकें

जिनके घर गोहरी न गोइठा उनके भी घर धुवाँ धुवाँ।
एक श्रृगाल हुआँ करता तो सब करते हैं हुआँ हुआँ।।

पुरस्कार से खेल रहे हैं
तिरस्कार को झेल रहे हैं
एक नदी धारा के लेखक–
देश द्रोह को ठेल रहे हैं

मर्यादित कद पद मद का भद दिखा कर रहे उआँ उआँ।
एक श्रृगाल हुआँ करता तो सब करते हैं हुआँ हुआँ।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्यों कि उनकी फौज बड़ी है

बिना खेत चकबन्दी करते
मनमाफिक हदबन्दी करते
जिसे चाहते उसे उठाकर–
जभी चाहते बन्दी करते

पीढ़ी दर पीढ़ी गद्दारी करते आये मौज बड़ी है।
शर्म हया धोकर पी डाले क्योंकि उनकी फौज बड़ी है।।

आओ, हमसे हाथ मिलाओ
एक साथ हैं शर्त मिलाओ
जादू छड़ी दोगलपन वाली–
स्वयं गदोरी दूब उगाओ

कुत्ता बिल्ली बकरा बकरी भेजो कॉजी हौज बड़ी है।
शर्म हया धोकर पी डाले क्योंकि उनकी फौज बड़ी है।।

कुछ मुट्ठी भर लोग खड़े हैं
देश धर्म के योग बड़े हैं
उनको पता नहीं घर–घर में–
हुआ संक्रमण! रोग बड़े हैं

इस बाने में आकर देखो पछताओगे मौज बड़ी है।
शर्म हया धोकर पी डाले क्योंकि उनकी फौज बड़ी है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब भारत का क्या होगा ?

गली गली में चीर हरण
जब करता दुःशासन होगा
बच्चों से गलती होती है
कुटिल हँसी 'कासन' होगा
सत्य बचन से बाला मुकरे
इस प्रकार त्रासन होगा
तब क्या जनता पूछ रही है, अब भारत का क्या होगा ?
सेना पर पत्थर बाजों का
दुगुना जब राशन होगा
उलटे सेना अधिकारों का
लोभों में डासन होगा
सत्य न्याय के गर्दन में
जब अपराधी फाँसन होगा
तब क्या जनता पूछ रही है, अब भारत का क्या होगा ?
भरत भूमि में भारत पर
जब इटली का शासन होगा
देश द्रोह को दूध पिलाने
वाला जब भाषन होगा
मन्दिर में मस्जिद मुल्लाओं
वाला जब आसन होगा
तब क्या जनता पूछ रही है, अब भारत का क्या होगा ?
पानी भर के थमा रहे हैं
हाथों में कागज थोंगा
जब सियार घर-घर में बैठे
पहने शेरों का चोंगा
रत्नाकर में लगा के डुबकी
सिर्फ ला रहे हैं घोंघा
तब क्या जनता पूछ रही है, अब भारत का क्या होगा ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ये कैसे पछतायेंगे ?

कुर्सी खातिर लिये कटोरा
जब दुश्मन घर जायेंगे
देशद्रोहियों से मिलकर के–
जब उनका गुन गायेंगे
जब अपने बनकर के छलिया सेना सिर कटवायेंगे।
तब अपनी करनी पर कंचन ये कैसे पछतायेंगे।।

नहीं शर्म है इसीलिए
ये थोड़े में अगरायेंगे
प्रतिद्वन्दी का खेल देखकर–
ये अक्सर चकरायेंगे
सारे नशे बुरे होते हैं फिर भी कर भहरायेंगे।
धो डाले जब शर्म हया तो ये कैसे पछतायेंगे।।

आरक्षण अनुरक्षण सब कुछ
बड़े गर्व से पायेंगे
खाते पीते इस धरती का–
किन्तु गीत ना गायेंगे
हिंसा में संलिप्त रहेंगे रिपु का ध्वज फहरायेंगे।
जिनके रग में भरा दोगलापन वे कैसे पछतायेंगे।।

सत्ता के लोभी नेता गण
इनको नित सहलायेंगे
कंचन ये हैं जीव निराले–
अपनी जड़ गहरायेंगे
लाख इन्हें समझाये कोई, ये अब समझ न पायेंगे।
जड़ से खत्म करो अब झंझट मत सोचो पछतायेंगे।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत को मजबूत बनाओ

अपनी कमी सुधारो केवल दूजे की मत कमी गिनाओ।
जाति पाति से ऊपर उठकर भारत को मजबूत बनाओ।।
बंद आँख की पट्टी खोलो
भारत का इतिहास टटोलो
अवसर की तलाश में दुश्मन
रुको फूट का विष मत खोलो
आपस में ही बँटे हुए हो दुनिया को तुम नहीं जनाओ।
जाति पाति से ऊपर उठकर भारत को मजबूत बनाओ।।
जब भी भीतर घात हुई है
हर राजा की मात हुई है
ग्रहण काल के आ जाने पर-
प्रायः दिन में रात हुई है
अभिशापित जयचंद मानसिंह उनकी अब मत कड़ी बढ़ाओ।
जाति पाति से ऊपर उठकर भारत को मजबूत बनाओ।।
बिना पैर के कौन चला है
बिना पेट के कौन पला है
क्षत्रिय बाँह करे रखवाली-
मुख ब्राह्मण मत कहो बला है
चारों तब मानव शरीर है नहीं द्वेष का बान चलाओ।
जाति पाति से ऊपर उठकर भारत को मजबूत बनाओ।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साथ तुरत ही जाना होगा

जिस दिन परमपिता दूतों के हाथों में परवाना होगा।
उस दिन सब कुछ छोड़ छाड़ कर साथ तुरत ही जाना होगा।।
जिस दिन जनम लिये उस दिन से
माया महल बनाते आये
यह भी हो जा, वह भी हो जा
उससे सिर्फ मनाते आये
प्रायः वह सब देता आया, अन्तिम नहीं ठिकाना होगा।
उस दिन सब कुछ छोड़ छाड़ कर साथ तुरत ही जाना होगा।।
लोभ, मोह, ईर्ष्या की निशिदिन
करते रहे कमाई
फिर भी इतना बड़ा कर्ज था
हुआ नहीं भरपाई
कभी नहीं विश्राम किये तुम, ऐसा कौन दिवाना होगा।
उस दिन सब कुछ छोड़ छाड़ कर साथ तुरत ही जाना होगा।।
अब भी उठ पाथेय बनाओ
कोई बाप न माई
मिला किराये का घर, अपना
समझ लिए हरजाई
जिस दिन रिक्त करायेगा घर, उस दिन रोना गाना होगा।
पाप गठरिया छोड़ चलोगे बस शमशान ठिकाना होगा।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुनिया का सुनना पड़ता है

लाख फूँक कर चलो कदम पर दुनिया का सुनना पड़ता है।
एकबार में दुनिया सारी
अपने पंख नाप मैं डालूँ
कोई भी मेरे सम्मुख हो–
अपने हाथ माप मैं डालूँ
होते भाव सभी के मन में, मन मसोस चुनना पड़ता है।
लाख फूँक कर चलो कदम पर दुनिया का सुनना पड़ता है।।
ऊबड़ खाबड़ संगमरमर पर
महल अटारी के बिस्तर पर
ओढ़ो चाहे उसे बिछाओ–
मन्दिर मस्जिद या दर–दर पर
रूई लेकर नई पुरानी धुनिया बन धुनना पड़ता है।
लाख फूँक कर चलो कदम पर दुनिया का सुनना पड़ता है।।
जग ने केवल संग दिया है
ऊपर वाला ढंग दिया है
किसको कैसे कब भरना है–
अपनी रुचि का रंग दिया है
ऊन सलाई कूची रंग ले, मन माफिक बुनना पड़ता है।
लाख फूँक कर चलो कदम पर दुनिया का सुनना पड़ता है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तब दर्पण धुँधला जायेगा

अगर लेखनी बिक जायेगी तब दर्पण धुँधला जायेगा।
नहीं साव को चोर कहेंगे
नहीं शाम को भोर कहेंगे
लाख पाउडर पोत मिलोगे-
नहीं श्याम को गोर कहेंगे
अगर विषैली हवा चली तो भावार्पण कुम्हला जायेगा।
अगर लेखनी बिक जायेगी तब दर्पण धुँधला जायेगा।।
बुद्धिजीवि कहलाने वालों
तलवों को सहलाने वालों
कैसी तेरी नियति हो गई-
देशद्रोह फैलाने वालों
तुममें से ही आकर कोई दर्पण को झुठला जायेगा।
अगर लेखनी बिक जायेगी तब दर्पण धुँधला जायेगा।।
निश्चित है कुहराम मचेगा
तुमको यह सच नहीं पचेगा
जिसको मान कलम की प्यारी-
वह सच का उत्थान रचेगा
कभी नहीं कोई 'कंचन' को आकर्षण बहला पायेगा।
अगर लेखनी बिक जायेगी तब दर्पण धुँधला जायेगा।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहले हिन्दुस्तानी थे

जो शहीद हो गये देश हित वे स्वतंत्र सेनानी थे।
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख इसाई पहले हिन्दुस्तानी थे।।

मात पिता से डरना सीखो
दूजे का दुख हरना सीखो
जीवन है बहुमूल्य किंतु तुम–
राष्ट्र धर्म पर मरना सीखो

फाँसी फंदा चूम मरे वे परमवीर बलिदानी थे।
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख इसाई पहले हिन्दुस्तानी थे।।

मुकुट हिमालय सिर पर गंगा
चरण पखारे वारिधि बंगा
भारत माँ की बेड़ी काटे–
सभी वर्ग रह भूखा नंगा

कुर्बानी दे ध्वज लहराये सभी भारतीय शानी थे।
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख इसाई पहले हिन्दुस्तानी थे।।

इसी तरह टकराये होते
अलग अलग स्वर गाये होते
चाटुकार बन वैदेशिक यदि–
वीरों को भरमाये होते

तो कंचन कस तुम्हें बताते सब शहीद अभिमानी थे।
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख इसाई पहले हिन्दुस्तानी थे।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फिर से दीप जलाना होगा

उठो जवानों! आगे आओ, फिर से दीप जलाना होगा।
भारतीय गौरव विशेष को अब फिर से दोहराना होगा।।
गलत व्याकरण पढ़ा रहे हैं
भ्रष्ट आचरण सिखा रहे हैं
यह जुनून कैसा है सब पर-
गलत आवरण चढ़ा रहे हैं
क्षुद्र स्वार्थ से ऊपर उठकर कंचन सबको आना होगा।
भारतीय गौरव विशेष को अब फिर से दोहराना होगा।।
वर्तमान कुछ ठीक नहीं है
कोई दिखता लीक नहीं है
जाता चाकी पड़े चतुर्दिक-
किंतु पास में झींक नहीं है
झींक डालने हेतु अन्न अब वह फिर से उपजाना होगा।
भारतीय गौरव विशेष को अब फिर से दोहराना होगा।।
बावन बिघा पोदीनावाली
भूल चलो सब जन अर्धाली
अपना उर घर सभी टटोलो-
खाली डिब्बा, बोतल खाली
भरना है या उर घर 'कंचन' फिर वह तत्त्व बनाना होगा।
भारतीय गौरव विशेष को अब फिर से दोहराना होगा।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिर्फ झोंक हम धूल रहे हैं

क्या हम हैं, क्या थे हम पहले इसी बात को भूल रहे हैं।
रस्सी कट कमजोर हो रही पेग बढ़ाकर झूल रहे हैं।।
सखी सहेली दोस्त मित्र सब
केवल नीचे देख रहे सब
गिरने के हालात आ गये-
रस्सी झूला देखेंगे कब?
आज हवा के हिचकोले खा मन ही मन सब फूल रहे हैं।
क्या हम हैं, क्या थे हम पहले इसी बात को भूल रहे हैं।।
रखा बाप का जो भी खाया
दुनिया को वह कभी न भाया
समय पूर्व चेता न जो भी-
धोखा खा, केवल पछताया
जिन बातों से लाभ नहीं है उसी बात को तूल रहे हैं।
क्या हम हैं, क्या थे हम पहले इसी बात को भूल रहे हैं।।
आपस की ये खींचातानी
हुआ नाक के ऊपर पानी
अगर जिद्द पर अड़े रहे तो-
ले डूबेगी ये मनमानी
अंधकार में सबकी आँखों सिर्फ झोंक हम धूल रहे हैं।
क्या हम हैं, क्या थे हम पहले इसी बात को भूल रहे हैं।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सेना का उत्साह बढ़ाये

चलों साथियों मिल जुलकर हम सेना का उत्साह बढ़ायें।
उनकी कीर्ति चतुर्दिक गाकर घर-घर में इतिहास मढ़ायें।।
सियाचीन जो डटे हुए हैं
तीन युद्ध में पटे हुए हैं
हमपे आँच न आने पाये-
हर कन्धे से सटे हुए हैं
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा आओ फिर से गीत कढ़ायें।
चलो साथियों मिल जुलकर हम सेना का उत्साह बढ़ायें।।
बढ़ सेना का हाथ बाँट लें
उनके रिपु का हाथ काट लें
अन्दर जो आतंकी रिपु हैं-
काट-काटकर माथ पाट दें
झंडा ऊँचा रहा हमारा, गद्दारों को पाठ पढ़ायें।
चलो साथियों मिल जुलकर हम सेना का उत्साह बढ़ायें।।
शत्रु हनन रुकने न पाये
ऊँचा ध्वज झुकने न पाये
महाशक्तियाँ भले एक हों-
शत्रु शीश उगने न पाये
भारत माँ की आन बान पर हम भी अपना शीश चढ़ायें।
चलो साथियों मिल जुलकर हम सेना का उत्साह बढ़ायें।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत माँ का चीर न खींचो

देश प्रेमियों बाहर निकलो घर बैठे मुट्ठी न भींचो।
आपस की खींचातानी में भारत माँ का चीर न खींचो।।
न्याय नीति का पंक बढ़ रहा
साधु-बिच्छु का डंक बढ़ रहा
कुम्भकर्ण की निद्रा त्यागो-
रोज-रोज आतंक बढ़ रहा
माँ का आँचल फटा जा रहा बेरहमी से शाख न खींचो।
यहीं पले हो यहीं बढ़े हो ऐसे मुड़कर आँख न मींचो।।
धन विदेश में चला जा रहा
कौन देश को छला जा रहा
मजबूरी में राष्ट्र पहरुआ-
सिर्फ हाथ को मला जा रहा
सूख जाय न यह फुलवारी ज्ञान तत्त्व से अपने सींचो।
देश वेश छलनी हो जाये, तरकश से न बान उलीचो।।
अनायास न शोर मचाओ
पहले अपना देश बचाओ
गलती-भूल सुधर जायेगी-
सोच समझ इतिहास रचाओ
वरना तुमको घृणा भाव से दुनिया कहेगी कायर नींचो।
बढ़ा लिये हो गलत कदम तो, अब से भी तुम पीछे खींचो।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कितना हम मजबूर हो रहे

अब पनघट पर गागरवाली
गागर में भी सागरवाली
पीछे बातें छूट रही हैं
मात पिता के आदरवाली
भाव हृदय से दूर हो रहे।
कितना हम मजबूर हो रहे।।
मर्यादायें भग्न हो रहीं
बहू बेटियाँ मग्न हो रहीं
कैसी सोच बताओ कंचन
फैशन में सब नग्न हो रहीं
अभिभावक गण सूर हो रहे।
कितना हम मजबूर हो रहे।।
नैतिकता का महाक्षरण है
सभा बीच में चीरहरण है
ऊँच नीच कुल अनदेखा कर
अपने मन हो रहा वरण है
रिश्ते चकनाचूर हो रहे।
कितना हम मजबूर हो रहे।।
मजबूरी में बँधे हुए हैं
घोड़े भी अब गधे हुए हैं
अब अनपढ़ गँवार न कोई
सब अपने में सधे हुए हैं
सबकुछ खो मशहूर हो रहे।
कितना हम मजबूर हो रहे।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हर सवाल का हल देता है

हर अकाश उड़नेवाले को दो क्षण को भूतल देता है।
नहीं दिखाई देता लेकिन हो सहाय पल-पल देता है।।
समय चक्र सा बढ़ना सीखो
उच्च शृंग पर चढ़ना सीखो
अन्दर बाहर अलग रंग है
हर मानव को पढ़ना सीखो
गिरगिट रंग बदलता जैसे वैसे रंग बदल लेता है।
इस मानव की कथा पुरानी अपनों को ही छल देता है।।
दूर-दूर तक फैली देखो
इनकी जीवन शैली देखो
कहने को मनुष्य हैं लेकिन
पशुओं से भी मैली देखो
जीवनभर तरसाता जिसको मरे घण्ट में जल देता है।
मतलब के सधते ही कंचन बहुत दूर को चल देता है।।
ऊर्ध्व मार्ग से रहते भगते
अधोमार्ग अनुयायी लगते
पूजा अरि ही हुए पुजारी
पूर्ण रूप व्यवसायी लगते
किसकी कितनी नीति बखानूँ बस अपात्र को फल देता है।
न्यायमूर्ति ऊपर भी कंचन आज नहीं वह कल देता है।।
वह कहता है कर्म करो तुम
मानवता का धर्म करो तुम
पापवृत्ति से दूर रहो नित
पापी मत हो, शर्म करो तुम
वह चाहे तो हर दुकान पर खोटा सिक्का चल देता है।
जो असहाय सदा से ही हैं उनको भी वह बल देता है।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वह चाहा तो पीर घटा है
जग समुद्र में नीर पटा है
बस विश्वास करो अब से भी
नहीं द्रोपदी चीर घटा है

वह दिमाग में सबके अन्दर हर सवाल का हल देता है।
सभी जीव को भोजन देता, मरुथल में भी जल देता है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहले देश बचाना होगा

जाति धर्म से राष्ट्र है ऊपर इसको आज बचाना होगा।
नेता जनता सभी जनों को बार-बार समझाना होगा।।
रोज-रोज संतुष्टि जनक ही
चारा उसको डाल रहे हैं
स्वयं बताओ जुबाँ से अपने
क्यों विषधर को पाल रहे हैं
गद्दारों को गद्दारी से निर्मम नाच नचाना होगा।
नेता जनता सभी जनों को बार-बार समझाना होगा।।
शासक जनता की आँखों में
रोज धूल ही झोंक रहे हैं
पर इनके खातिर मनुष्य कुछ
कुत्ते जैसे भोंक रहे हैं
इनको करो बहिष्कृत 'कंचन' फिर-फिर शोर मचाना होगा।
नेता जनता सभी जनों को बार-बार समझाना होगा।।
देशद्रोहिता नहीं पलेगी
नादिरशाही नहीं चलेगी
आस्तीन साँपों से कह दो
इनकी दालें नहीं गलेगी
भगत सिंह आजाद रेख से भारी रेख रचाना होगा।
अपनी जान लगाकर बाजी पहले देश बचाना होगा।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत ललित गा लेने देते

गीत ललित गा लेने देते, मीत फलित पा लेने देते।
रूप राशि का ऐसा स्यन्दन
माथे पर केशरिया चन्दन
कई जनम के पून्य उदय से
ऐसा आज मिला है बन्धन
कुछ क्षण को आँखों आँखों में मुझको भी भा लेने देते।
गीत ललित गा लेने देते, मीत फलित पा लेने देते।।
त्याग प्यार का परिचायक है
हृदय हार का नवगायक है
अपनी जान लुटा वेदी पर
हँसने वाला यह नायक है
अमर मार्ग जाने से पहले सीमा पर छा लेने देते।
गीत ललित गा लेने देते, मीत फलित पा लेने देते।।
माँ का शीश निहार रहा हूँ
अपना जीवन वार रहा हूँ
लेश मात्र न मरने का दुख
माटी कर्ज उतार रहा हूँ
जीत हेतु रिपु के सीने पर एक बार धा लेने देते।
गीत ललित गा लेने देते, मीत फलित पा लेने देते।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घर की प्रीति सलट जाती है

पूजा वाला आसन न हो
सुबह शाम का राशन न हो
आँखों का पानी मर जाये
जिस घर में अनुशासन न हो
उस घर में आकर के लक्ष्मी उलटे पाँव लवट जाती हैं।
सुबह शाम दुर्भाग्य मनाती देहरी स्वयं उलट जाती है।।
सुबह शाम जिस घर न झाड़ू
बाथरूम में रहता छाड़ू
घर का मुखिया झक्क मारता–
जब सलाह देता है साढ़ू
हर सदस्य की अपनी मति गति अच्छे वक्त पलट जाती है।
उस घर में आकर के लक्ष्मी उलटे पाँव लवट जाती हैं।।
घर आँगन से दिखे न बादर
बिस्तर पर गन्दी हो चादर
गली मोहल्ला आदर पाता–
मात पिता का नित्य अनादर
उस घर की शोभा रोती है, हो श्रीहीन कलट जाती है।
उस घर में आकर के लक्ष्मी उलटे पाँव लवट जाती हैं।।
जिस घर में बर्तन हो जूठा
हर सदस्य आपस में रूठा
दिखा तर्जनी होश दिलाये–
जब तब चमकाये अँगूठा
उस घर सीढ़ी चढ़ते चढ़ते घर की प्रीति सलट जाती है।
उस घर में आकर के लक्ष्मी उलटे पाँव लवट जाती हैं।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोई लाख गुनी हो लेकिन

कोई लाख गुनी हो लेकिन उससे भी गलती होती है।
अगर जगत अभिशापित कर दे तो सच में धरती रोती है।।
सबका स्वार्थ नहीं सध सकता
नर परमार्थ नहीं बध सकता
केवल बालू भीति अगर हो–
कोई छत्र नहीं लद सकता
दुस्साहस करने पर साथी अपनी ही सम्पति खोती है।
कोई लाख गुनी हो लेकिन उससे भी गलती होती है।।
सदा नीति पर चलना सीखो
मर्यादा में ढलना सीखो
कंचन सा यदि चमक चाहिए–
प्रथम आग में जलना सीखो
जो बस भाग्य दुहाई देता उसकी भाग्य सदा सोती है।
कोई लाख गुनी हो लेकिन उससे भी गलती होती है।।
रोता हृदय हँसाना सीखो
खोता रोज बनाना सीखो
हार मानकर कभी न बैठो–
गोता रोज लगाना सीखो
मानव की श्रमशील साधना जीवन में मोती बोती है।
कोई लाख गुनी हो लेकिन उससे भी गलती होती है।।
थोड़े में इतरा मत जाओ
थोड़े में छितरा मत जाओ
दूध दही लगते हाथों में–
पीतल सा पितरा मत जाओ
प्रायः शासन नीति रीति के तम में भी ज्योति बोती है।
कोई लाख गुनी हो लेकिन उससे भी गलती होती है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बलिवेदी पर माथ चढ़ाओ

आजादी कायम रखना तो बलिवेदी पर माथ चढ़ाओ।
सदा नींद में सोना त्यागो
केवल गीत प्रगति के पागो
अपने निज दायित्त्व बोध से-
पीठ घुमाकर कभी न भागो
छोटे बड़े सभी जन मिलकर मातृभूमि हित साथ बढ़ाओ।
आजादी कायम रखना तो बलिवेदी पर माथ चढ़ाओ।।
तुम पर है ये जिम्मेदारी
हाथों में तलवार दुधारी
जिसमें साहस रही चपलता-
उससे ही ये दुनिया हारी
इसीलिए अब बुद्धि शुद्ध कर उसका ही हथियार गढ़ाओ।
आजादी कायम रखना तो बलिवेदी पर माथ चढ़ाओ।।
जिन मोंहि मारा तिन मोंहि मारूँ
शत्रुन के घर द्वार उजारूँ
परम अहिंसा के पोषक पर-
हिंसा करने से क्यों हारूँ
राष्ट्र लिए सबकुछ जायज है इस प्रकार का पाठ पढ़ाओ।
आजादी कायम रखना तो बलिवेदी पर माथ चढ़ाओ।।
विस्तृत भारत की चर्चा कर
विश्व पटल पर वह पर्चा भर
जो कटकर के अलग हुए हैं-
उन्हें मिलाकर पुनः एक कर
आधी रही एशिया अपनी ऐसी तुम तस्वीर मढ़ाओ।
आजादी कायम रखना तो बलिवेदी पर माथ चढ़ाओ।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्यों भाग रहे हो ?

जो प्रभु ने है दिया सहज वह भार छोड़ क्यों भाग रहे हो ?
बहुत धनी या अतिगरीब हो
खुशनसीब या बदनसीब हो
अथक परिश्रम के बलबूते–
जब फल के बेहद करीब हो
तो वांछित गुलाब से पहले खार छोड़ क्यों भाग रहे हो ?
अपनी दुनिया सबको प्यारी
चक्र घूमता पारा–पारी
भौतिकता की चकाचौंध में–
छोटा बोझ नहीं है भारी
दुर्लभ जग में मात पिता का प्यार छोड़ क्यों भाग रहे हो ?
असुरक्षित धारा बहने पर
पत्नी बच्चों के कहने पर
कष्ट दे रहे जानबूझ कर–
सारी सुविधायें रहने पर
सुगम भैरवी ब्रह्मनाद का राग छोड़ क्यों भाग रहे हो ?
बड़े रोग को पाले हो तुम
हाथों में ले छाले हो तुम
मायावी चक्कर में पड़कर–
अपनी ही कर डाले हो तुम
तब करवट को बदल बदल कर नींद छोड़ क्यों जाग रहे हो ?

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सारी सीमा पार हो गये

औरों को क्या खिला सकोगे मात पिता जो भार हो गये।
कहते थे संसार हमारा,
वसुधा ही परिवार हमारा
पानी बस माँगा था केवल-
कर डाले कूँआ ही खारा
कैसे आँख मिला पाओगे ? जीवन के आधार खो गये।
बहुत बड़े थे छोटे हो गये
बुद्धिमान थे खोटे हो गये
पॉकिट के संग भरी तिजोरी-
दो पैसे के टोटे हो गये
टूट गई सारी मनुहारें रिश्ते सब बेकार हो गये।
गाँव नगर सब हँसते होंगे
ताने मेहने कसते होंगे
मेरे संग तुमको भी कंचन-
जहर दंश दे डँसते होंगे
प्यार भरा परिवार एक था कहने को अब चार हो गये।
अब क्या कुछ कहना बाकी है
जीवन की कैसी झाँकी है
माँ के दूध, पिता के मेहनत-
की कीमत इतनी आँकी है
तू-तू मैं-मैं फिर कर करके सारी सीमा पार हो गये।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किसी किसी घर में मिलती है

अब पायल की रुनुक झुनुक ध्वनि किसी किसी घर में मिलती है।
चंदा को लख ताल तलैया कभी कुमुदिनी अब खिलती है।।
रातों में दिन, दिन में रातें
प्रकृति विरुद्ध हो रही बातें
अगर किसी से बात छेड़ दें-
फिर उसकी देखें अवकातें
काली, लक्ष्मी, सरस्वती आ नित उसकी कथरी सिलती हैं।
चंदा को लख ताल तलैया कभी कुमुदिनी अब खिलती है।।
इन्द्रदेव उससे डरते हैं
वरुणदेव पानी भरते हैं
जग के संचालक सुन करके-
उसकी मनवाली करते हैं
वह चाहे तो सुबह शाम हो पेड़ों की पत्ती हिलती है।
चंदा को लख ताल तलैया कभी कुमुदिनी अब खिलती है।।
पहला अन्तिम रोटी कौरा
फूलों पर मँडराते भौंरा
हैं मकान आँगन विहीन सब
यदि आँगन, न तुलसी चौरा
आज हुई इतिहास की बातें कहीं कभी देखन मिलती है।
चंदा को लख ताल तलैया कभी कुमुदिनी अब खिलती है।।
ले पूनी कर सूत कातते
घर सिवान में भूत नाचते
द्वार बिछा खटिया पर दद्दा-
कथा कहानी रहे बाँचते
चाहे कोई सदी रही हो रीत प्रीत सब कुछ लिलती है।
चंदा को लख ताल तलैया कभी कुमुदिनी अब खिलती है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सबको ही रहना है डर के

किसे गर्ज इतिहास टटोले
कौन राज की बातें खोले
जिसकी पहुँच जहाँ जितनी है–
बस उतनी ही बातें बोलें
काम हो गया आगे सरके।
सबको ही रहना है डर के।।

चाहे जैसा पूत चाहिए
सबको अपना दूत चाहिए
गलत सही चाहे जैसे भी–
धन संपत्ति अकूत चाहिए
भूल गये हैं, जाना मर के।
सबको ही रहना है डर के।।

सबका अपना ही करतब है
गाँव देश से क्या मतलब है
सत्ता मद में आँख बन्द है–
मेरे सिवा न दूजा रब है
लूटो बस अँजुरी भर भर के।
सबको ही रहना है डर के।।

राजनीति की रीति घिनौनी
हो जाने दो जीत घिनौनी
एक लक्ष्य बस हुआ सामने–
भले मनुज की प्रीत हो बौनी
मोटा होना है चर-चर के।
सबको ही रहना है डर के।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राह में हैं सोइये मत

चोर हैं सब घात में ही, राह में हैं; सोइये मत।
यात्रा का है मिला अवसर इसे अब खोइये मत।।
किसकी वृत्ति कहाँ तक रोकें
किसको कहाँ कहाँ पर टोकें
साधु असाधु सदा से ही हैं–
जब जिसके आ जाये झोंके
बीज है गर हाथ में, मौसम बिना वह बोइये मत।
चोर हैं सब घात में ही, राह में हैं; सोइये मत।।
अपने हित, हित लगना होगा
दिवा रात में जगना होगा
सीरे में यदि तार चाहिये–
बहुत देर तक पगना होगा
दूसरों की देख किस्मत भाग पर निज रोइये मत।
चोर हैं सब घात में ही, राह में हैं; सोइये मत।।
हर तरफ काली निशा है
आदमी भटका दिशा है
दानवी धारा सदा खुश–
देवता हरदम पिसा है
जो सहज अग्राह्य है बरबस उसे अब ढोइये मत।
चोर हैं सब घात में ही, राह में हैं; सोइये मत।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जिस घर रोये मात-पिता नित

जिस घर रोयें मात-पिता नित उस घर समझो भाग सो गया।
कुशल गवैया मंच चढ़ा तो जैसे उसका राग खो गया।।
कौन राम थे, कौन कृष्ण थे
उनको कभी न देखा हूँ
छोटा हूँ या बड़ा हूँ जग में
दिया उन्हीं की रेखा हूँ
रग में दौड़ रहा खूँ उनका
चेहरा मोहरा उनके गुन का
याद करो छोटी चीजों पर
कई बार बचपन में तुनका
किन्तु कभी वे बुरा न माने अनचाहे में हृदय रो गया।
जिस घर रोयें मात-पिता नित उस घर समझो भाग सो गया।।
जब जन्में, वे सुने हुआ सुत
खोज फूल का थाल बजाया
लीप-पोत गोबर से ही घर
बरही में थे द्वार सजाया
हाथ जोड़ स्वजनों को अपने
अपने घर के द्वार बुलाया
रूखा-सूखा भोग लगाकर
पूछ-पूछकर उन्हें खिलाया
आँखों में आशीष कामना, पाकर सुत वह व्योम हो गया।
जिस घर रोयें मात-पिता नित उस घर समझो भाग सो गया।।
जब समाज में हुआ प्रतिष्ठित
उसे देखकर मन हरषाया
बेटा मेरा सदा सुखी हो
वाणी से आशीष लुटाया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महानगर का वासी होकर
बेटा अपना भवन बनाया
मात पिता को संग रखने को
गाँव छुड़ाकर शहर बुलाया
पिता कहें गँवई गवार थे मेरा सुत होशियार हो गया।
जिस घर रोयें मात-पिता नित उस घर समझो भाग सो गया।।
माँ दाई, दरबान पिता को
बतलाकर निज मान बढ़ाया
सुनते आँख पिता की छलकी
क्यों इतना सुत नाथ पढ़ाया
है कलि का प्रभाव पीढ़ी पर
या पोषण में कमी रह गई
अब जीना धिक्कार हमें है
पौरुषता चुपचाप कह गई
अनपढ़ ही इससे अच्छा था पढ़ लिखकर कुल मान धो गया।
टूटी साँस पिता की उस क्षण अन्तरिक्ष में प्राण सो गया।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहले विचार आवश्यक है

जन आवाज न सुननेवाला
बस अपनी ही गुनने वाला
प्रायः असफल हो जाता है–
उन्मादित सिर धुनने वाला
कोई कदम उठाने से पहले विचार आवश्यक है।
असफलता ही हाथ लगी है जिसने कभी किया झक है।।

विच्छेदन की राजनीति ने
एक वर्ग की परम प्रीति ने
आँखों पर परदा डाला है–
चारण वाली कलम गीति ने
कुछ भी प्रस्तुति से पहले उसमें निखार आवश्यक है।
कोई कदम उठाने से पहले विचार आवश्यक है।।

बहुत दूर तक चलना है गर
जन आँखों में पलना है गर
सबको सम प्रकाश के खातिर–
दीपशिखा सा जलना है गर
तब उर के कलुषित विकार का त्याग बहुत आवश्यक है।
कोई कदम उठाने से पहले विचार आवश्यक है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीवन वीर जिया करता है

आवर्षण की रीति पुरानी
आकर्षण की प्रीति पुरानी
सहजभाव से हुआ सफल है–
कर घर्षण की नीति पुरानी
होता जग में नाम उसी का जो कुछ काम किया करता है।
दो क्षण ही पर दीपशिखा सा जीवन वीर जिया करता है।।

कच्छप सा नित चलने वाला
हर स्थिति में ढलने वाला
हर मौसम के झेल थपेड़े–
निज मौसम में फलनेवाला
बस अपने ही चाल ढाल से सबका ओठ सिया करता है।
दो क्षण ही पर दीपशिखा सा जीवन वीर जिया करता है।।

मौन भाव कर ज्ञान रहा है
कौन किसी को जान रहा है
बहती नदिया की धारा का–
जल करतब से छान रहा है
उसके पीछे दुनिया चलती जो अवदान दिया करता है।
दो क्षण ही पर दीपशिखा सा जीवन वीर जिया करता है।।

नहीं माँगता झुक कर भिक्षा
प्रायः लेता रुककर शिक्षा
अपना वह कर्त्तव्य निभाता–
बस ऊपरवाले की इच्छा
वीर शिवा, राणा प्रताप, मीरा सा गरल पिया करता है।
दो क्षण ही पर दीपशिखा सा जीवन वीर जिया करता है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुछ दिन के हो नहीं अमर

ऊपरवाले की है माया
बड़े भाग से जग में आया
चौरासी में सबसे ऊपर
मानव की काया है पाया
इस जीवन का सदुपयोग कर।
कुछ दिन के हो, नहीं अमर।।
जिसको समझ रहे हो अपना
वह माया, जीवन का सपना
कर्त्तव्यों को करते-करते
भूल गये हो उसको जपना
जबकि तेरा वही असल घर।
कुछ दिन के हो, नहीं अमर।।
इसपर भी स्वामित्त्व नहीं है
यह केवल दायित्त्व नहीं है
भ्रम मत पाल समझ कर के चल
कुछ भी स्थायित्त्व नहीं है
डूब-डूब कर नहीं भोग कर।
कुछ दिन के हो, नहीं अमर।।
मैं तो केवल रोक रहा हूँ
अपने मन से टोक रहा हूँ
रूप रुपैया बिखरा कंचन
जीवन में डरपोक रहा हूँ
तूँ भी डर जा, सँभल, योग कर।
कुछ दिन के हो, नहीं अमर।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुनिया का दस्तूर यही है

यह संसार गजब का मेला
सम्बन्धों का रोज झमेला
कुटिल हँसी अधरों पे रखके-
मजबूरी से सबने खेला
मैं थोड़ा हूँ इससे हटकर, मेरा सकल कसूर यही है।
अपनी मनवाली करती है, दुनिया का दस्तूर यही है।।

थोड़ा देकर बहुत चाहता
मीठे-मीठे बहुत डाहता
है सामर्थ्य अगर पैसे की-
प्रिया षोडसी, प्रौढ़ व्याहता
उटपटांग लगता है मुझको, कड़वा पर सच बात यही है।
अपनी मनवाली करती है, दुनिया का दस्तूर यही है।।

इसको कौन सुधार सकेगा
इस दानव को मार सकेगा
बहुत बड़ा बलिदान माँगता-
अपना जीवन वार सकेगा
चाहे जैसे समझो कंचन, बस मनसा भरपूर यही है।
अपनी मनवाली करती है, दुनिया का दस्तूर यही है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीने के प्रति चाह चाहिए

हर जीने वाले के मन में जीने के प्रति चाह चाहिये।
चाह अगर पूरी करनी हो, मन में प्रबल उछाह चाहिये।।
जो घर से निकला कुछ करने
और उसे आलस ने घेरा
छोटी-छोटी सी बातों पर-
करने लगा जो तेरा-मेरा
उसकी राह शिलायें रोकें आगे हेतु निगाह चाहिये।
हर जीने वाले के मन में जीने के प्रति चाह चाहिये।।
जो जीवन से डर जायेगा
वह सचमुच में मर जायेगा
लोक कहावत दाँव लगाकर-
राह चला कुछ कर जायेगा
उठकर गिरना, गिरकर उठना, शिखर हेतु उत्साह चाहिये।
हर जीने वाले के मन में जीने के प्रति चाह चाहिये।।
पैसा - पैसा बना रुपैय्या
पत्ती - पत्ती देती छैय्याँ
गाड़ी मोटर छोड़ आसरा-
चलना सीखो पैय्याँ पैय्याँ
जंगल और पहाड़ों में भी श्रम की सुन्दर राह चाहिये।
हर जीने वाले के मन में जीने के प्रति चाह चाहिये।।
लिये इरादे सभी नेक हैं
सूरज चंदा सभी एक हैं
शैत्य ताप दोनों देते हैं-
मन में ठाने नहीं टेक हैं
नित्य निरंतर चलने खातिर मन में ईप्सित दाह चाहिये।
हर जीनेवाले के मन में जीने के प्रति चाह चाहिये।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुद्धि तुम्हारी कहाँ सो गई

संस्कार संस्कृति के पोषक
विश्व प्रीति के हो उद्घोषक
मानव जाति सुखी सब जन हों
निज पड़ोस के हो दुख मोचक
सोच तुम्हारी कहाँ खो गई, जो न चाहे वही हो गई।
बुद्धि तुम्हारी कहाँ सो गई।।

रामराज की थी तैय्यारी
पूज रही थी दुनिया सारी
एक भूल ने किया अनर्गल
पूरी हो गई नदिया खारी
कौन मंथरा बीज बो गई, मुट्ठी-मुट्ठी आँख रो गई।
बुद्धि तुम्हारी कहाँ सो गई।।

बकरी बाघ मनाना होगा
दानव मार भगाना होगा
जलता दीप बुझा है औचक
फिर से उसे जलाना होगा
चेतो और सुधार करो तुम बुद्धि तुम्हारी कहाँ सो गई।
बड़े बोल में भूल हो गई।।

तुमसे जग को आस बहुत है
फेंको सबको घास बहुत है
तुमको चढ़ता देख सका न
जो तेरा ही खास बहुत है
तेरी सारी अच्छाई को कंचन तेरी नीति धो गई।
बुद्धि तुम्हारी कहाँ सो गई।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरा दिन है रात करो मत

पाले, पोसे, बड़े हो गये
अपने पग पर खड़े हो गये
मैंने धातु बनाना चाहा–
वे मिट्टी के घड़े हो गये
कुछ कहने पर उलटा ही वे कहते पापा बात करो मत–
मेरा दिन है रात करो मत।

इन्टरनेटी रोग लग गया
पूरब वाला भोग लग गया
होटल बदल बदल खाने का–
बेटे को हठयोग लग गया
पढ़े-लिखे हैं, हम स्वतन्त्र हैं, इच्छाओं पर पात करो मत।
मेरा दिन है रात करो मत।।

मेरे पास समझ है अपनी
किसकी माला कब है जपनी
मेरे ऊपर आप छोड़ दो–
तौल बटखरा औ है नपनी
उपदेशों को पास रखो खुद बेमौसम बरसात करो मत।
मेरा दिन है रात करो मत।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थोड़ी सी गुंजाइश रखना

सम्बन्धों को बीस नहीं, इक्कीस से बढ़कर बाइस रखना।
जब भी कोई कहासुनी हो थोड़ी सी गुंजाइश रखना।।

तेज कभी मंदा होता है
विनिमय का धंधा होता है
लिये मुखौटा दो-दो निशिदिन
कलयुग का वंदा होता है

कोई ना करने न पाये, इस प्रकार की च्वाइस रखना।
जब भी कोई कहासुनी हो थोड़ी सी गुंजाइश रखना।।

कोई पूर्ण नहीं है जग में
फिसला हर कोई है मग में
बात और व्यवहार बताता
कैसा खून बह रहा रग में

कोई बेईमान कहे न, रिश्तों की पैमाइश रखना।
जब भी कोई कहासुनी हो थोड़ी सी गुंजाइश रखना।।

नेती, नेवली करते रहना
झोली सबकी भरते रहना
लाख कोई लख के मुस्काये
भोली सूरत पे न मरना

खेल खेल है, मत भरमाना, तुम भी आइस-पाइस रखना!
जब भी कोई कहासुनी हो थोड़ी सी गुंजाइश रखना।।

आत्म निरीक्षण करते रहना
जगवालों की सहते रहना
दुनिया गहरी है, भँवरी है,
धारा लख के बहते रहना

आँख मिला के बात कर सको, बस इतनी सी ख्वाहिश रखना।
जब भी कोई कहासुनी हो थोड़ी सी गुंजाइश रखना।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इच्छाओं का दमन हो गया

बड़े जतन से पाई शिक्षा
और पास की कठिन परीक्षा
आरक्षण ने दिया कटोरा–
माँग रहा हूँ दर–दर भिक्षा
मैंने भी सपने पाले थे, इच्छाओं का दमन हो गया।
पैसा रुपया पा न पाया
किसी काम के आ न पाया
उद्यम पूरी किया उम्र भर–
किसी धाम में जा न पाया
घर बैठे ही शीश झुकाया, समझ लिया कि नमन हो गया।
मुझे प्यार ने त्याग सिखाया
स्वर में भरना राग सिखाया
दूजे का दुख बाँट बाँट कर–
खुश रहना अनुराग सिखाया
उसकी खुशियाँ भरीपुरी लख मन का विकसित चमन हो गया।
अपने ढंग से जीता आया
जीवन को मैं सीता आया
बाँट दिया अमृत रस धारा–
जो अग्राह्य था पीता आया
जाने किसकी दृष्टि लग गयी, भरी सभा में वमन हो गया।
दुख ही था जीवन का गहना
नहीं चाहता था मैं कहना
घाट किनारे पड़ा रहा पर–
आज पड़ गया मुझको बहना
कंचन कलम चली ऐसी कि आह–दाह का शमन हो गया।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थोड़े में इतराना क्या है

हर घर की अभिशप्त कथा है
अन्तर्मन में जप्त व्यथा है
तू-तू, मैं-मैं, असंतोष-
परिवारीजन की प्राच्य प्रथा है
इससे फिर घबराना क्या है।
अच्छा कर, करता ही चल, फिर दुनिया में आना क्या है।।
जनम जनम के रिश्ते होते
जिसको पाते औ हम खोते
कभी-कभी हम भूल कथा को-
डुबकी खूब लगाते गोते
थोड़े में इतराना क्या है।
जो तेरे संग वो करता है, उसको ही दोहराना क्या है।।
पाप-पुण्य का लेखा जोखा
पाना, देना केवल धोखा
अहंकार करवाता सबसे-
कंचन जग में काज अनोखा
पूछ रहा मनमाना क्या है।
आँख मूँद बस चलता ही चल, चलने में हरजाना क्या है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इससे कौन उबार सकेगा

देख देख अनदेखा करना
कहीं अनैतिक रेखा करना
दुनिया की है रीति पुरानी-
कहीं कूद कर खे खा करना
इसको कौन सुधार सकेगा।
इससे कौन उबार सकेगा।।
कौन किसी का मित्र यहाँ पर
छिड़क रहा है इत्र यहाँ पर
परदे पर हमको आना है-
रोका कौन, चरित्र यहाँ पर
विषम घिनौनी अहं वृत्ति को।
कौन यहाँ पर मार सकेगा।।
सृष्टि काल से ही कल,बल,छल
सबका बन जाता है सम्बल
बहती नदिया देख देखकर-
मैल धो रहा हर नर मल-मल
लोभ, मोह, ईर्ष्या की गठरी।
कौन स्वयं से जार सकेगा।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेखनी कुछ बोल दे तू

लेखनी कुछ बोल दे तू, जिन्दगी का मोल दे तू।
लेखनी कुछ बोल दे तू।।

रागिनी का राग टूटा
छन्द लय का भाव टूटा
छोड़ जग के आज क्रन्दन
जोड़ दे तू प्यार बन्धन, इस परत को खोल दे तू।
लेखनी कुछ बोल दे तू।।

बन्द कर यह दग्ध मन्थन
लेप कर दे प्रलय चन्दन
प्यास चातक सी बनी है
आज घातक सी ठनी है, इन सभी का पोल दे तू।
लेखनी कुछ बोल दे तू।।

तम कलुष सारे बहाकर
ज्ञान गंगा में नहाकर
तार वीणा के बजा दे
कल्पनाओं को सजा दे इस तरह रस घोल दे तूँ।
लेखनी कुछ बोल दे तूँ।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुम्हीं देश की शान हो

प्यारे बच्चों कदम बढ़ाओ, तुम्हीं देश की शान हो।
तुम्हीं देश की मान हो, तुम्हीं देश की जान हो।।
तुम्हें है बनना राम कृष्ण
औ गौतम गाँधी ज्ञानी
तुम्हें है बढ़ना जैसे बढ़ता
लीक बनाकर पानी
अब्दुल हमीद सा वीर बनो
औ राणा सा बलिदानी
जैसे जग में रहे शिवाजी
झाँसी वाली रानी
इसी तरह की राष्ट्रभक्ति हो, एक स्वर इक गान हो।
प्यारे बच्चों कदम बढ़ाओ, तुम्हीं देश की शान हो।।
कभी नहीं छोटा दिल करना
नहीं किसी से डरना
मौत सामने खड़ी रहे तुम
फिर भी आह न भरना
द्वेष, दम्भ, पाखण्ड न रखना
नहीं किसी को छलना
भले तुम्हें फूलों से हटकर
पड़े आग पर चलना
ऐसा काम सदा तुम करना, जिससे देश महान हो।
प्यारे बच्चों कदम बढ़ओ, तुम्हीं देश की शान हो।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीवन में प्यार कर सके

नहीं है कोई जो जीवन में प्यार कर सके।
इस सूने मन्दिर में जीवन सार भर सके।।
जिसके सौरभ से
वातायन महक उठे
पंछी कर कलरव व
गायन चहक उठे।
नहीं है कोई जो बातों से बात कर सके।
फूले दिल से फूलों की बरसात कर सके।।
जिसका सुधियों की
देहरी पर गान कर सकूँ
जगते-सोते, दिवा-रात,
सम्मान कर सकूँ।
नहीं है कोई जो रजनी से प्रात कर सके।
मेरे दुःख को लखकर अश्रुपात कर सके।।
जिसके स्वर को पाकर,
मेरा साज बज उठे,
अनचाहे अन्तर्मन
जिसका नाम भज उठे।
नहीं है कोई जो आँचल का भार हर सके।
धारा में आयी नैय्या को पार कर सके।।
नहीं है कोई जीवन में प्यार कर सके।
इस सूने मन्दिर में जीवन सार भर सके।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निर्दोष रहने दो

गगन को निर्दोष रहने दो।

शरद पूनम चाँद को मत दिखा,
दाग कितना और कैसा मत दिखा,
तारिकाओं के नगर में चंचला,
नृत्य करती या इशारा मत दिखा।

होश में हूँ बन्धु! होश रहने दो।
गगन को निर्दोष रहने दो।

शब्द सर्जक के लिए यह छोड़ दो,
अग्नि है या नमी यह छोड़ दो,
भावना की भक्ति में बहकर चलो,
व्यर्थ की जंजीर को तोड़ दो।

कल्पना का कोष रहने दो।
गगन को निर्दोष रहने दो।।

आज के वैज्ञानिकों का चन्द्रमा,
है नहीं मेरी कलम का चन्द्रमा,
है सुधा जहँ चन्द्रमुख उपमान,
है वही मेरा पुरातन चन्द्रमा।

वेद के घोष को घोष रहने दो।
गगन को निर्दोष रहने दो।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तो मैं क्या करूँ

प्यार करना नहीं चाहता हूँ मगर–
हाथ कोई बढ़ाये तो मैं क्या करूँ ?

रूप की चाँदनी में नहाया नहीं,
नीर नयनों से मैंने बहाया नहीं,
नैन को मूँदकर चल रहा हूँ मगर–
नैन कोई लड़ाये तो मै क्या करूँ ?

हाथ से मैं कलम तक छुआ भी नहीं,
शब्द का बोध मुझको हुआ भी नहीं,
गीत गाना नहीं जानता हूँ मगर–
गीत कोई कढ़ाये तो मैं क्या करूँ ?

हाथ छेनी हथौड़ी गहा तक नहीं,
मूर्त्तिकारों के संग में रहा तक नहीं,
मूर्त्ति छूने से डरता रहा हूँ मगर –
मूर्त्ति कोई गढ़ाये तो मैं क्या करूँ ?

मन्दिरों में कभी पग बढ़ाया नहीं,
देवताओं को मस्तक झुकाया नहीं,
फिर हृदय से मुझे देवता मानकर–
फूल कोई चढ़ाये तो मैं क्या करूँ ?

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुरभित मलय बहार

जीवन के उस पार चमन में सुरभित मलय बहार।
अर्न्तमन में द्वन्द्व नहीं है
कवि होठों पे छन्द नहीं है
भावों में अनुबन्ध नहीं है–
अब फूलों में गन्ध नहीं है
शाश्वत सत्य भरे जीवन से कैसे मानूँ हार।
जीवन के उस पार चमन में सुरभित मलय बहार।।
कलियों पर भौरों का फेरा
बागों में कोयल का डेरा
नागिन–महुवर और सपेरा–
सम्बन्धों का जाल चचेरा
जीवन जीना एक कला किससे किसका मनुहार।
जीवन के उस पार चमन में सुरभित मलय बहार।।
रोटी खातिर व्यस्त सभी हैं
अधिकारी से त्रस्त सभी हैं
श्रम से हारे पस्त सभी हैं–
किन्तु यहाँ अलमस्त सभी हैं
एक खुशी रह रह कर सोचे जाऊँ किसके द्वार।
जीवन के उस पार चमन में सुरभित मलय बहार।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुजारा हम भी कर लेते

नहीं ऐसा कोई मिलता
जिसे अपना भी कह लेते
नहीं अब शेष स्मृतियाँ
जिसे सपना भी कह लेते
नहीं मन सिन्धु अब मेरा जो लाखों जख्म सह लेते।
नहीं अब चाँद शीतल है
न सौरभमय बहारें हैं
निगाहें जिस तरफ उठतीं–
उधर शर की दिवारे हैं
नहीं अब तेल दीपक में उजाला हम भी कर लेते।
नहीं पतवार है कोई
जो नैया छोर पर लावे
नहीं आँखों में है निंदिया–
सुलाकर भोर कर जावे
नहीं कोई बढ़ाता कर, सहारा हम भी कर लेते।
हुआ उत्तप्त है अन्तर
अंक संस्कृति जो मिल जाये
भव के तिमिर अंचल में–
पूर्ण शरदेन्दु खिल जाये
फिदा कर जिन्दगी 'कंचन' गुजारा हम भी कर लेते।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरे जैसा गाँव नहीं है

दरिया में अब नाँव नहीं है, अमराई में छाँव नहीं है।
गाँव बहुत से होंगे लेकिन मेरे जैसा गाँव नहीं है।।

पग-पग पर छेंका करते हैं
आँखों को सेंका करते हैं
घुरहू के आँगन में रोड़ा
धनिया पर फेंका करते हैं

दो क्षण को जो सुख दे जाये, वह लोगों में भाव नहीं है।
गाँव बहुत से होंगे लेकिन मेरे जैसा गाँव नहीं है।।

चाल-चलन है रहन नहीं है
द्वार बहुत है सहन नहीं है
कहने को ये गाँव की मेरी
लड़की है पर बहन नहीं है

कौवा मामा कभी बोलते थे वैसा अब काँव नहीं है।
गाँव बहुत से होंगे लेकिन मेरे जैसा गाँव नहीं है।।

बिच्छू जैसे डंक नहीं हैं
सब राजा हैं रंक नहीं हैं
मेरी पीड़ा को सहला दे-
आँचल वैसे अंक नहीं हैं

दरिया दिल वाली दरिया है पर दरिया में नाँव नहीं है।
गाँव बहुत से होंगे लेकिन मेरे जैसा गाँव नहीं है।।

पहले जैसा राज नहीं है
स्वर है लेकिन साज नहीं है
साड़ी में अब भी घूँघट है
किन्तु आँख में लाज नहीं है

श्रद्धा भाव जनमने वाली पायल है पर पाँव नहीं है।
गाँव बहुत से होंगे लेकिन मेरे जैसा गाँव नहीं है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिंहासन हिल जायेगा

घन आतप की बात मत करो
आँखों से बरसात मत करो
एक दिवस ऐसा आयेगा
तेरा तुझको मिल जायेगा।

अब दुर्दिन को छँट जाने दो
वसन फट रहा फट जाने दो
दर्जी खड़ा पास है तेरे
वसन नया फिर सिल जायेगा।

यह धरती की रीति पुरानी
पहले आँधी बाद में पानी
जो होता है हो जाने दो
सुमन चमन में खिल जायेगा।

संयम नियम रखो तुम अपना
लक्ष्य कभी करना मत सपना
हृदय दुखा यदि कहीं सती का
शंभु सिंहासन हिल जायेगा।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किसको मित्र बनाऊँ मैं

दर्द भरे इन गीतों को अब कैसे किसे सुनाऊँ मैं।
हमने माना जिसको अपना
जिसने माना हमको अपना
वे हुए आज हमको सपना
हम हुए आज उनको सपना
अब किन गलियों में जा खोजूँ, कैसे उन्हें मनाऊँ मैं।
दर्द भरे इन गीतों को अब कैसे किसे सुनाऊँ मैं।।
जिस बगिया को रक्तों से
सींचा और सँवारा था
जिसमें थी मेरी खुशी भरी
जो प्राणों से भी प्यारा था
वह क्षणभर में ही उजड़ गया, अब कैसे उसे सजाऊँ मैं।
दर्द भरे इन गीतों को अब कैसे किसे सुनाऊँ मैं।।
जो सुबह हाथ में हाथ दिये
वे शाम को हाथ छुड़ाय चले
जो शाम को मन से मन बाँधे
वे सुबह हमें तड़पाय चले
तुम्हीं बताओ अब 'कंचन' फिर किसको मित्र बनाऊँ मैं।
दर्द भरे इन गीतों को अब कैसे किसे सुनाऊँ मैं।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं पिपासित रह गया

इस कदर मरुथल मिला कि मैं पिपासित रह गया।
मैं उड़ा था सोचकर
जाकर गिरूँगा खेत में
भाग्य ने झटका दिया–
आकर गिरा मैं रेत में
क्या बताऊँ क्या हुआ, आँखों का सपना बह गया।
इस कदर मरुथल मिला कि मैं पिपासित रह गया।।
छाँव के ही खोज में
उड़ जा गिरा कुछ दूर पर
प्रेम से उसने दुलारा–
पाँव थे खर्जूर पर
हाल तक पूछा नहीं, अपनी कहानी कह गया।
इस कदर मरुथल मिला कि मैं पिपासित रह गया।।
तब तलक आया थपेड़ा
छोटे से तूफान का
पर हमारे विंध गये–
पूछो न कुछ अरमान का
बेबसी आँखों में ले, चुपचाप सब कुछ कह गया।
इस कदर मरुथल मिला कि मैं पिपासित रह गया।।
सत्य है क्या–क्या कराती
हैं नहीं मजबूरियाँ
अपनी ही परछाई खुद–
कैसे बनाती दूरियाँ
लख रहा कंचन स्वयं, मन का महल जब ढह गया।
इस कदर मरुथल मिला कि मैं पिपासित रह गया।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहो क्या करूँ ?

भावनाओं को मेरे समझ न सका–
मित्र ऐसा मिला है कहो क्या करूँ ?

ताने–बाने की गुत्थी सुलझ न सकी
दृष्टि से दृष्टि मेरी उलझ न सकी
ज्ञान गंगा को कोई बहाता रहा
मैं समय बेसमय ही नहाता रहा

साधनाओं में सारी उमर ये कटी–
इष्ट मिल न सका तो कहो क्या करूँ ?

फूल काँटों में ही रोज चुनता रहा
कल्पनाओं की जंजीर बुनता रहा
कोई सितार का तार धुनता रहा
मौन बहरा बना उसको सुनता रहा

कन्दराओं में भी उसको ढूँढ़ा बहुत–
वह नहीं मिल सका तो, कहो क्या करूँ ?

पाप क्या ? पुण्य क्या ? ये समझ न सका
दान क्या ? पुन्य क्या ? ये समझ न सका,
शास्त्र को छानकर थक गया हूँ बहुत
अंक क्या ? शून्य क्या ? ये समझ न सका

यातनाओं में जीता रहा सर्वदा–
आह तक भर न पाया, कहो क्या करूँ ?

शब्द औ ब्रह्म का रूप है ये गगन
प्रेम के रूप में कृष्ण मीरा मगन
बीच चन्दन छिपा लोग कहते अगन
काँच कंचन में ही सारी दुनिया मगन

प्रार्थनाओं की शैली सभी की अलग–
प्रार्थना न सुना तो कहो क्या करूँ ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फिर आदर्श बनाना होगा।

टूट चुका जो बिना मरम्मत घर वह फर्श बचाना होगा।
फिर आदर्श बनाना होगा।।

कौन भागता कहाँ जा रहा
जिसकी मर्जी जहाँ जा रहा
अपने संसाधन को देखो
घर में मठ्ठा महा जा रहा
मथनी मटकी उभय बचाकर, फिर नव वर्ष मनाना होगा।
फिर आदर्श बनाना होगा।।

क्रान्तिबीज को बोने वालों
अपनी गुरुता खोने वालों
तुमको भी आवाज दे रहा
अश्व बेच कर सोने वालों
खुद में संशोधन कर करके, फिर उत्कर्ष बनाना होगा।
फिर आदर्श बनाना होगा।।

आज चैन में ऐंठो मत तुम
स्याह रैन में पैठो मत तुम
हाथों में निज दही जमाकर
कायर बन के बैठो मत तुम
उद्यम की बगिया निर्मित कर फिर से हर्ष रचाना होगा।
फिर आदर्श बनाना होगा।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ओठों का स्पर्श चाहिए

मेरे गीतों को तेरे बस ओठों का स्पर्श चाहिए।
लुका छिपी करता बदली में चंदा जैसे हर्ष चाहिए।।
भावों की नदिया गहरी हो
बहुत देर से तुम ठहरी हो
देख रहा हूँ सफल तरंगें
किसी बंध की सुर लहरी हो।
अनुप्राणित होता मैं जाऊँ, चेतन विमल विमर्श चाहिए।
मेरे गीतों को तेरे बस ओठों का स्पर्श चाहिए।।
बसी हृदय में जाप तुम्हीं हो
इन प्राणों की ताप तुम्हीं हो
भूतल दृष्टि जमाये जाती
कानों में पदचाप तुम्हीं हो
कर्ण विवर सुनने को आतुर, वही पुराना हर्ष चाहिए।
मेरे गीतों को तेरे बस ओठों का स्पर्श चाहिए।।
मन के भाव बनाये रखना
अपने देव मनाये रखना
कंचन का नित मंगल होवे
ऐसे जापों को ही जपना
कला-कला बढ़ चाँद पूर्ण हो, मुझे वही उत्कर्ष चाहिए।
मेरे गीतों को तेरे बस ओठों का स्पर्श चाहिए।।
तूने व्रत उपवास किया है
मर-मर, सौ-सौ बार जिया है
मेरे हिस्से की रुसवाई
हँसकर तुमने वार लिया है
उजड़े वीराने उपवन में, पुनः वही आदर्श चाहिए।
मेरे गीतों को तेरे बस ओठों का स्पर्श चाहिए।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उजाला कर दिया होता

बहुत से लोग आये थे जो आँखों में समाये थे।
किसी ने जो मेरे दिल में उजाला कर दिया होता।।
पुरोधों ने बनाया था
नियम कानून धरती का
भले तन हो भरा कचरा-
मगर उपवास बरती का
बेमन से ही चला करते
जमाने को छला करते
बिठा के मन में मूरत को शिवाला कर दिया होता।
किसी ने जो मेरे दिल में उजाला कर दिया होता।।
मैं भूखा हूँ अपाहिज हूँ
पड़ा हूँ जानते थे सब
लिये ईमान की लाठी-
खड़ा हूँ, माँगते थे सब
मगर सब थे खड़े हँसते
हँसी में भी रहे डँसते
निगाहें डाल थाली में निवाला भर दिया होता।
किसी ने जो मेरे दिल में उजाला कर दिया होता।।
किसी बाने में मैं भी
चाहकर के छल दिया होता
सभी जन ताकते रहते
मैं हँस के चल दिया होता
मगर खुद को तरासा हूँ
स्वयं भारत की भाषा हूँ
असीमित धन पचाकर के दिवाला कर दिया होता।
किसी ने जो मेरे दिल में उजाला कर दिया होता।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं तेरा वरबस मेहमान

रात दिवस अपनी रोता है
अब सम्बन्ध नहीं ढोता है
क्षणभर को भी मौका मिलता-
स्वार्थ बीज को बस बोता है
प्यार बोलकर, आँख खोलकर, अब से भी कर लो पहचान।
मान, मान न, भले न मान, मैं तेरा बरबस मेहमान।।
केवल सीखा रोना धोना
जबकि विस्तृत नभ का कोना
रूप रुपैय्या के चक्कर में-
सबने सीखा जादू - टोना
चश्मा लगा लगा के पढ़ लो, अपना खोल खोल के ज्ञान।
मान, मान न, भले न मान, मैं तेरा बरबस मेहमान।।
ताना बाना टूट गया है
जो भी आया लूट गया है
संवेदन का जल था घट में-
वह घट ही अब फूट गया है
ले उपकरण चलो कूँए तक, कूँए का अब पानी छान।
मान, मान न, भले न मान, मैं तेरा बरबस मेहमान।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चैतन्य होता जा रहा

आज मन मेरा सहज चैतन्य होता जा रहा है।
आज का क्षण और प्रतिक्षण धन्य होता जा रहा है।।
है विहंगम दृष्टि तेरी
हो रही है वृष्टि तेरी
है नहीं सामर्थ्य मेरी
मैं संभालू सृष्टि तेरी
श्रवण कर हर साँस ध्वनि अनुमन्य होता जा रहा है।
आज मन मेरा सहज, चैतन्य होता जा रहा है।।
जब कभी भागा मेरा मन
जब कभी माँगा मेरा मन
पा सहज आघात से ही
जब कभी जागा मेरा मन
तब हुआ महसूस, मन ये वन्य होता जा रहा है।
आज मन मेरा सहज, चैतन्य होता जा रहा है।।
भाव मन का उभरता है
घाव मन का उभरता है
धारणायें बदल जातीं
चाव मन का सुधरता है
दूसरे क्षण सोचता सौजन्य होता जा रहा है।
आज मन मेरा सहज, चैतन्य होता जा रहा है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चोट दिखाई देती है

अब बच्चों को मात-पिता में खोट दिखाई देती है।
बातें होती मन विरुद्ध तो चोट दिखाई देती है।।
न्याय नीति की बात करो मत
भाव प्रीति की बात करो मत
वर्तमान में जीना सीखो
लोक रीति की बात करो मत
हर ग्राहक में वेश्या को बस नोट दिखाई देती है।
अब बच्चों को मात-पिता में खोट दिखाई देती है।।
कोई कुशल चितेरा होगा
जब भावों ने घेरा होगा
पीड़ा में वह छटपटाय कर
बाल्मीकि सा टेरा होगा
सहमी डरी हुई चिड़िया को ओट दिखाई देती है।
अब बच्चों को मात-पिता में खोट दिखाई देती है।।
राजनीति वेश्या से बदतर
कंचन कहता अब भी हद कर
एक लक्ष्य कुर्सी के खातिर
जो करता है, वह अब मत कर
जनता सिर्फ बनी है मोहरा, वोट दिखाई देती है।
अब बच्चों को मात-पिता में खोट दिखाई देती है।।
मिला है जीवन जी लेने दो
सबकी जिह्वा सी लेने दो
दरिया का जो भी हो जाये
अंजुरी अंजुरी पी लेने दो
सपने में भी बस वकील को कोट दिखाई देती है।
अब बच्चों को मात-पिता में खोट दिखाई देती है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समय

समय ने अनेकों कहानी गढ़ा है
समय ने अनेकों जवानी पढ़ा है
समय ने दिया साथ जब भी किसी का–
भले ही था लंगड़ा शिखर पर चढ़ा है।

समय होता छोटा, समय ही बड़ा है
समय की बदौलत कोई हर खड़ा है
समय की खिलाफत किया कोई जब भी–
समय कुछ न बोला, वो औंधे पड़ा है।

समय होता अनुकूल बनता महूरत
समय है बनाता तुझे खूबसूरत
समय को जरूरत किसी की नहीं है
मगर हर किसी को समय की जरूरत।

समय की शिला तोड़ कोई न पाया
समय की शिला मोड़ कोई न पाया
समय की गुफा में समाहित बहुत हैं-
समय जो हिला जोड़ कोई न पाया।

समय साथ में है अधर हास तेरा
समय हाथ में हास–परिहास तेरा
समय को समझकर चलो आज कंचन
समय फिर बनायेगा इतिहास तेरा।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीवन में कल नहीं मिला है

समय छोड़ चलने वाले को जीवन में कल नहीं मिला है।
समय कर्म को पकड़ के चलना
नीति धर्म को जकड़ के चलना
बहकावे, धन, पद घमण्ड में–
कंचन त्यागो अकड़ के चलना
लीक तोड़ चलने वालों को जीवन में फल नहीं मिला है।
समय छोड़ चलने वालों को जीवन में कल नहीं मिला है।।
सदा प्रश्न को पढ़ता आया
सदा प्रश्न से लड़ता आया
साफ पाक दिखने के खातिर–
सदा प्रश्न को मढ़ता आया
प्रश्नोत्तर गढ़ने वालों को प्रश्नों का हल नहीं मिला है।
समय छोड़ चलने वालों को जीवन में कल नहीं मिला है।।
अपनों को खलने वालों को
ईर्ष्या में जलने वालों को
बस प्रशस्ति के लिए दम्भ में–
सदा ध्यान छलने वालों को
बिन विवेक जो उड़ता नभ में उसे कभी थल नहीं मिला है।
समय छोड़ चलने वालों को जीवन में कल नहीं मिला है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्या मतलब

पीड़ा को दे दे के कइ–कइ लोग हँसे
पीड़ा को क्रीड़ा समझे औ' लोग डँसे
दल–दल में धँसने वाले को कौन उबारे ?
ऐसी सोच हो गई ? कहते और धँसे
जिसको अपनी अस्मत प्यारी रही नहीं
क्यों जीता है ? उसके जीने का क्या मतलब ?

सैंतालिस का घाव आज तक रिसता आया
हिन्दू अपने ही स्वभाव से पिसता आया
कहने को सब भाई–भाई रहे मगर–
भाई की गर्दन पर चाकू घिसता आया
श्वाँस नहीं दे रहा, नली को क्यों सीता है ?
क्यों सीता है ? उसको सीने का क्या मतलब ?

वर्षों रहे गुलाम आज तक समझ न आई
एक तरफ कूँआ खोदे दूजे में खाई
माँ बहनों का सौदा कब तक कहो करोगे
जीना सीखो कर्ज करो अब भरपाई
जिल्लत का जीवन जीने को अमृत पीता ?
अमृत पीता ? अमृत पीने का क्या मतलब ?

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माँग रहे फिर से आजादी

सब स्वतंत्र हैं अपने मन के, जिससे मन हो कर ले शादी।
सेना का कर बाँध-बाँधकर माँग रहे फिर से आजादी।।

इनकी भला सोच है कैसी ?
इनके मन में खोंच है कैसी ?
भद्र मनुज सा दीख रहे हैं-
फिर ये पीछे पोंछ है कैसी ?

इनकी भाषा सुन सुन के, रिपु रोज कर रहे हैं बरबादी।
सेना का कर बाँध-बाँधकर माँग रहे फिर से आजादी।।

नदी प्रदूषित में बह सकते
शान्त नहीं ये चुप रह सकते
सत्ता के इतने भूखे हैं-
भारत को कुछ भी कह सकते

आजादी का मोल भूलकर, भूल गये ये चरखा खादी।
सेना का कर बाँध-बाँधकर माँग रहे फिर से आजादी।।

नवरातर में रखते रोजा
चाह रहे कि संस्कृति खो जा
सत्ता पुनः मुझे मिल जाये-
भारत टुकड़े-टुकड़े हो जा

सच को झूठ बताने खातिर, पीट रहे हैं रोज मुनादी।
सेना का कर बाँध-बाँधकर, माँग रहे फिर से आजादी।।

जनता जिद पर अड़ी हुई है
सबको अपनी पड़ी हुई है
देश बचे या भाड़ में जाये-
लूटो इज्जत खड़ी हुई है

जाति पाति का चक्र चला के, काट दिये आधी आबादी
सेना का कर बाँध-बाँधकर, माँग रहे फिर से आजादी।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वह तेरी कमजोरी है

मानवता पर मरने वालों
मानव धर्म समझने वालों
अब भी चेतो और सम्हल लो–
मूँग वक्ष पर दलने वालों
जिसको तुम उत्थान मानते वह तेरी कमजोरी है।
घर का भेदी लंका ढाहे कैसी तेरी चोरी है।।

आपस में लड़ते रहने का
सीने पर चढ़ते रहने का
सिर्फ झूठ के लिए मसौदा–
नये–नये गढ़ते रहने का
नींद तुम्हें आने न पाये ठगने वाली लोरी है।
जाति धर्म में उलझ गये हो जब की नाजुक डोरी है।।

फूट डालकर राज किये थे
सबकी घर की लाज पिये थे
चन्द दोगलों के चलते ही
बेड़ी डाले, काज किये थे
वही चाल पाशा फेंके है आपस की बरजोरी है।
जिसको साधक समझ रहे हो, वह तो धूर्त अघोरी है।।

देखो अपना देश बढ़ रहा
स्वर्ण मृगों का कोश बढ़ रहा
उनकी चिन्ता सिर्फ एक है–
भारत का परिवेश बढ़ रहा
वर्षों से जो तुम्हें रिझाये उनकी नीति छिछोरी है।
अब भी सच को समझ न पाया कंचन की कमजोरी है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्यों इतना विद्वेष हो रहा

अपनी ही धरती से बोलो, क्यों इतना विद्वेष हो रहा।
कुछ लोगों के चलते गौरव, बार-बार ये देश खो रहा।।
क्यों इतने बेशर्म हुए हैं
रंचमात्र भी लाज नहीं है
सबको खुजली मची हुई है
जब की उनको खाज नहीं है
कौन दे रहा इन्हें सहारा, नहीं जरा भी क्लेश हो रहा।
अपनी ही धरती से बोलो, क्यों इतना विद्वेष हो रहा।।
इन्हें छोड़ सारे जगवाले
अपनी परिधि बढ़ाना चाहें
ये अपने को छोटा करके
भद तस्वीर मढ़ाना चाहें
आखिर कौन पड़ा है पीछे, जो इनमें विषबीज बो रहा।
अपनी ही धरती से बोलो, क्यों इतना विद्वेष हो रहा।।
ये थे विश्वगुरू पदवाले
अपना कद छोटा कर डाले
उगे हुए सूरज के मुँह पर-
स्याह पोत काला कर डाले
जो होना था नहीं हुआ वह, आँखें मूँद भविष्य सो रहा।
कुछ लोगों के चलते गौरव बार बार ये देश खो रहा।।

अपनी ही धरती से बोलो, क्यों इतना विद्वेष हो रहा।
कुछ लोगों के चलते गौरव, बार-बार ये देश खो रहा।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उलट पोखरी कही नदी से

उलट पोखरी कही नदी से, भरा हुआ जल देखा है क्या ?
मैंने क्या क्या पापड़ बेला, तुमने भी कल देखा है क्या ?
ज्ञानी ध्यानी हुए नदारत
आँखों में है सिर्फ तिजारत
भूखा नंगा कभी रहा पर,
देखो बदल रहा है भारत
नैतिकता पर मर जाते थे, तुमने भी पल देखा है क्या ?
उलट पोखरी कही नदी से, भरा हुआ जल देखा है क्या ?
गाँवों से बदहाल शहर है
ढाह रहा बस सिर्फ कहर है
विश्वासों का गला घोंटकर,
परसादी में मिला जहर है
इससे कुछ का पेट पल रहा, ऐसा भी छल देखा है क्या ?
उलट पोखरी कही नदी से, भरा हुआ जल देखा है क्या ?
घर बैठे हो रही परीक्षा
बहुत दूर सो रही प्रतीक्षा
तेरी सामर्थ्यों पर निर्भर,
गलत करो या सही समीक्षा
कलम पौध इमली टहनी में आमों का फल देखा है क्या ?
उलट पोखरी कही नदी से, भरा हुआ जल देखा है क्या ?
मरुथल में मछली चलती है
आँधी में ढिबरी जलती है
यह करतब लख नैन मूँद,
आश्चर्य भरे कर को मलती है
हंस तके मुँह, उल्लू बाँटे ज्ञान, भला बल देखा है क्या ?
उलट पोखरी कही नदी से, भरा हुआ जल देखा है क्या ?

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शीशे का घर एक चोट में

शीशे का घर एक चोट में चकनाचूर बिखर जाता है।
मानव का यह बड़ा दोष है
सब पर करता बड़ा रोष है
अहंकार में सदा भूलता
कैसे मेरा बढ़ा कोष है
छोटी सी गलती करके मानव यह स्वयं उतर जाता है।
शीशे का घर एक चोट में चकनाचूर बिखर जाता है।।
आटा है तो होगी भूसी
आपस की यह काना-फूसी
कंचन मैं ही अंह ब्रह्म हूँ
बात-बात में दकियानूसी
छोटी-छोटी रोक-टोक पे घर-परिवार विफर जाता है।
शीशे का घर एक चोट में चकनाचूर बिखर जाता है।।
बोलो, लेकिन रुकना सीखो
कहीं-कहीं पर झुकना सीखो
कुछ सीखें अच्छी भी होतीं
अहं वृत्ति से चुकना सीखो
छोटी-छोटी ग्रहण सीख से जीवन धन्य निखर जाता है।
शीशे का घर एक चोट में चकनाचूर बिखर जाता है।।
सदा एक सा सबको दीखे
छोटे बड़े सभी से सीखे
अपने में बस परिष्कार कर
देखो सबके कुशल तरीके
छोटे-छोटे पग रख करके कछुआ कीट शिखर जाता है।
शीशे का घर एक चोट में चकनाचूर बिखर जाता है।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

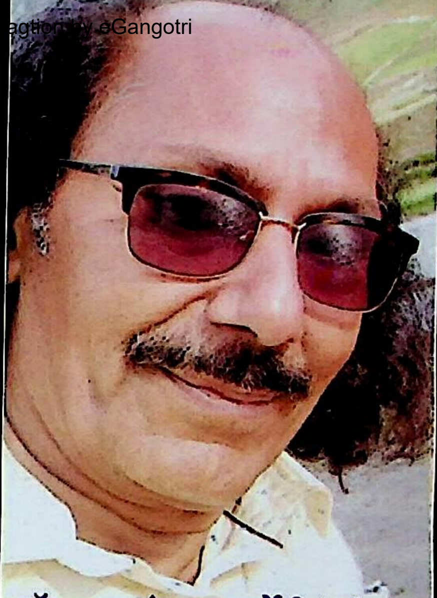

डॉ0 उमाशंकर चतुर्वेदी 'कंचन'

जन्म 1 मार्च 1958 ई.

स्थान नेमडाँड़,मऊ (उ.प्र.)

माता स्व. भगवती देवी

पिता स्व. पं. रामचन्द्र चतुर्वेदी

शिक्षा नव्य व्याकरणाचार्य, साहित्यरत्न, पी-एच.डी

सम्मान डॉ. राधाकृष्णन सम्मान, साहित्यश्री, आदर्श शिक्षक सम्मान

कृतियाँ नई लकीरें, देवी माँ, मृगतृष्णा, सुहागिन *(सभी कहानी संग्रह)*, स्वर आज दिया तुमने, छल गया मैं, एक सुखद स्पर्श है कविता *(मुक्तक संग्रह)*, रंग के छींटे, *(गीत,गजल,छन्द संग्रह)*, स्वर व्यञ्जन *(बालकविता संग्रह)*, हिन्दी, गंगा, रामदूत *(खण्डकाव्य)*, सहज निबन्ध *(निबन्धसंग्रह)*, हनुमत साठिका *(प्रार्थना काव्य)*, कंचन दोहावली।

सम्प्रति : प्रधानाचार्य - श्री आदर्श सेवा संस्कृत विद्यालय, ईश्वरगंगी, वाराणसी (उ.प्र.)

सम्पर्क : मो. 09415256054

ई-मेल : kavijee23@gmail.com

***

Dr. Urmila Sharma

संस्कृति प्रकाशन
बी.32/32ए-14, साकेत नगर, वाराणसी-5 उत्तर प्रदेश
मो. 9415256054, 9473952095
e-mail : sanskritiprakashan1@gmail.com
www.sanskritiprakashan.com

Available On Also

ISBN 93-85717-62-6
9789385717628

₹ 150